इत्ती बेर प्रयान । कहत तुम लज्जा नहीं ॥
कोंन काल जीवन्न । काज जस संचौ आहीं ॥
तुम चित छंडि हम घर चलहि । इह अवथ पचंग ॥
जुड जुरो चिचंग तौ । अग चोहान नरिंद ॥

छं० ॥ ३५६ ॥

कबित्त ॥ समुद विड्डि संभरिय । राज अग्गिय अहुट्ट पति ॥
अंत दान कालिंद थान । राजंग पान गति ॥
देस काल पातर पवित्र । संभरि संभारिय ॥
अंत दान संकलपि । सोम कन्या अवधारिय ॥
मूरष मुषंग तौ अंग सौं । प्रान देह दावन सुवन ॥
प्रिथिराज सथ्थ सामंत सौ । धुनि निसान मंड्यौ सुदिन ॥

छं० ॥ ३५७ ॥

दूहा ॥ धन चौरी मुक्यौ सु धन । सही न पुट्टि अवाज ॥
मोहि चलंतह चिंतवन । धर चित्र कोट सुलाज ॥

छं० ॥ ३५८ ॥

कवित्त ॥ विभौ जाय जौ ध्रम्म । क्रम्म जौ जाइ भजत हरि ॥
मान जाइ सम प्रान । ग्यान जौ जाइ तत्त जरि ॥
भत्य जाइ बिन लज्ज । हेत सों जाय कपट्टह ॥
चित्त जाय पर नार । नारि जौ जाइ लंपटह ॥
रसं जीह जाहि अपजस लगै । बंस जाय जौ जुड मुष ॥
प्रति प्रथिराज रावर कहै । इनहि जंत लग्गै न दुष ॥

छं० ॥ ३५९ ॥

चंदानौ आयास । बास भ्रगुटी रुद्रानौ ॥
द्वै नयना द्वै सूर । तेज अग्निनि ना सानौ ॥
जीह वरुन जल स्वाद । करन मंडल वायालय ॥
बाहु इन्द्र आसरै । ब्रम्ह इंद्री दासालय ॥
सब देव विसन अग्यार मैं । आन अनंदे तौ फिरै ॥
चिचंग राय रावर चवै । प्राहुन्ना भग्गा भिरै ॥

छं० ॥ ३६० ॥

मो' भग्गे संग्राम। मोहि भग्गै भग्गै अरि॥
वसों साज रन सूर। सुमत मुक्कै कलहं करि॥
तत्त पांच पाहुना। भगत चुक्कियै न कित्ती॥
नव ग्रह ग्रह फिरि ग्रेह। मुक्कि जीरन ग्रह जित्ती॥
सगपन सुनेह सनमंध नहि। लज्ज ध्रम्म धर्न चुक्कियै॥
चिचंग राय रावर चवै। तत्त पंथ नहि मुक्कियै॥

छं०॥ ३६१॥

पृथ्वीराज का कहना कि आप हमारें पाहुने हैं अस्तु हम आपको विदा करते हैं आप जाकर अपने राज्य की रक्षा कीजीए।

तुम पाहुना परदीप। राज पर कै का झुंझ्यौ॥
चहुआना कुल पुज्ज। राज दुज की बर पुज्जौ॥
तुम पुट्ठे गिरि जंग। द्रुग्ग दारुग गंभीरो॥
गुज्जर वै माल वै। हम भज्जौ हम्मीरो॥
फल फूल पान अंबर सुबर। मुकुट बंध चामर सरज॥
सामंत सूर जो[1] राज घर[2]। एक सुदिन मानै बरस॥

छं०॥ ३६२॥

एक बरष सामंत। जानि गोरिय भिरै भर॥
एक बरष सामंत। बंस सिसपाल पलह जर॥
एक बरष सामंत। बीर अब्बू गढ़ छंड्यौ॥
एक बरष सामंत। जुइ भोरा भर मंड्यौ॥
दिन इक सोय सामंत को। पंग भ्रम्म दरहंत जिय॥
साध्रम्म बाल बोल्यौ तहा। मरन छंडि महिला रजिय॥

छं०॥ ३६३॥

रावल जी का उत्तर देना कि मैं सुरतान में मिलूंगा।

मो मुंजानी ढाल। माल कमला कुद्रानी॥

(१) ए.-सो (२) ए. कृ. को.-रा वरह, मो

मो नाग सुषी सिल्लार। ब्रह्म मोगर सिद्धानी॥
हौं सिंगी रा अवधूत। जोग बच्छों जुड़ानी॥
हौं आहुठाम भामि। स्वामि कहि जों सुरतानी॥
सामंत मंत केते कहौं। केते घर गोरी बहन॥
हौं कालंक राय कप्पन बिरद। महन रंभ चाहौं कहन॥
छं०॥ ३६४॥

महन रंभ आरंभ। छच जैजै तप वारिय॥
महन रंभ आरंभ। राय जहौं षग भारिय॥
महन रंभ आरंभ। साहि बंध्यौ गुज्जर वै॥
महन रंभ आरंभ। षग्ग भट्ठी करि ह्वै॥
कालंक राय दुज्जन दवन। निगम सोह बंधे रवन॥
भग्गौ सुबंध संग्राम कौ। जो चिचंगि कीनो गवन॥
छं०॥ ३६५॥

रावल जी को कुपित देख कर पृथ्वीराज का उनके पैर पकड़ कर कहनां कि जो आप कहैं सो करुं।

सुनि सुबत्त चहुआन। नयन सम सिंघ निरष्यिय॥
भ्रकुटि व्रक्र द्रगस्त। करन सुष बरन सु दष्यिय॥
अंक तेज असहेज। ग्रीषम मध्यान भांन सम॥
गहिय पाय प्रथिराज। कहहु सोइ मंत मन्न तुम॥
जंपै सु सिंघ चहुआन सुनि। हम अयान मंत न कहै॥
पुच्छौ सुमंत सामंत सब। जिन बोलां धर उग्रहै॥
छं०॥ ३६६॥

कहै राज प्रथिराज। सुनौ पति कोट चिच तुम॥
तुम बड्डे बड्डाय। सब्ब राजन्न देस जुम[1]॥
तुम जुगिंद जग जित्त। तुमह हम पुच्छि प्रीत गुन॥
मंति अथाह जुध राह। दछ्य सब नीति मंत मन॥
तुम वत्त मत्त कुन उच्चरै[2]। तुम उप्पर हम को हि तुअ॥

(१) मो-सब सामंत है तुम, (२) ए. कृ. को.-तुम सत्त मत्त कां नुच्चारै

उत्तरौ एक बत्तिय तुमै। सो हम मानै मन्न धुत्र॥

छं० ॥ ३६७ ॥

रावल जी का कहना कि तुमने और अनर्थ तो किये सो किये परन्तु चामंडराय को बेड़ी क्यों भरी।

क्यों ग्रहियौ दाहिमौ। राज गंजन का[1] गज्यौ॥
पातिसाह परबंध। ताहि भर मह कां भज्यौ॥
मान हीन क्यों कर्यौ। तुच्छ करि कांइ दिषायौ॥
भिरि भारथ सम पथ्थ। नाहि पुरपत्त गमायौ॥
प्रथिराज काज साधन समर। गय[2] घट संमुह टिल्लिय॥
चामंड राय दाहर तनौ। तिहि पग लोह न मिल्लिय॥

छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि उसने मेरा सर्व श्रेष्ठ हाथी मार डाला।

इसौ हार सिंगार। जिसौ ऐरावति इंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ ल्लिष्यमी गयंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ गज ग्राह स्याम घन॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ सुप्रति करि नंगन॥
कुवलया पील जनु कंस कौ। बरन सोभ गनपति बनिय॥
चिचंग अग्ग चहुआन कहि। सो दाहिम्मै किम हनिय॥

छं० ॥ ३६९ ॥

दूहा ॥ संभरिवै रजबट रहन। पनि रावल इह कथ्य॥
सिंधुर भाम उलालि रिन। गय नंगन भारथ्थ ॥छं०॥ ३७० ॥

रावल जी का कहना कि चामंड राय को छोड़ दो।

सिंघ कहै प्रथिराज सुन। एक सत्त बर सत्त॥

---

(१) ए. कृ. को.-क्यों। (२) ए. कृ. को.-गंज।

दाहिमो छंडो न्टपति । एह भत्त मुभरत्त[1] ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

कबित्त ॥ महन रंभ आरंभ । राज रावल रा हिंदू ॥
सत्त मत्त बर बैठि । जवन जोगिन ग्रह जिंदू ॥
चाहुआन कूरभं । गौर गाजी बड़ गुज्जर ॥
जादौं रा रघुबंस । पार पुंडीरति पष्षर ॥
रट्टौर पवार मुरस्थलिय[2] । ब्रह्म चालुक जंगल भरा ॥
चामंड राय कड्ढौ न्रपति । जो किवार संभरि धरा ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

महन रंभ आरंभ । साईं सामंत विचारौं ॥
तौ छंडौ चामंड । ढिल्लौ मंडल उच्चारौ ॥
समर चलत रष्षियै । समर बंधियै समर बर ॥
सुवर सूर गोरी नरिंद । दह गुन्ह[3] सज्जि दल ॥
कलहंत केलि लग्गिय विषम । हैवै सिंधु समुत्तरी ॥
मंडियै जुंद्ध सुरतान सौं । सुगति मग्ग पुल्लहि दरी ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज का चामंड को छोड़ देने पर राजी होना ।

दूहा ॥ छंडन कहि चामंड रा । जुग जोगिंद सुदेस ॥
धर रष्षन जो तोहि न्रप । करि सामंत नरेस ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

पंगी पाघ[4] सुरंग जग । सामंता सत भाव ॥
जुद्ध निबंध्यौ साहि सौं । छंडो चामंड राइ ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चामंड की बेड़ी उतारने के लिये पृथ्वीराज का स्वयं चामंड राय के घर जाना ।

कवित्त ॥ बंभन बाहौ बद्धौ । ठेलि ठट्टो पर जारिय ॥
जिंहि मुंगल मैवात । मारि मोहिल उज्जारिय

(१) मो.-मुझ परत । (२) ए. कृ. को.-सुरस्थलिय । (३) मो.-दहगुनौ ।
(४) ए.कृ. को.-पाग

जिहि केहरि कंठेरि। तारि कढ्यौ तत्तारिय ॥
जिहि राया रघुबंस। आय संभर संभारिय ॥
इंद्रपथ्थ सुपंथह कारनै। बाहर बीर बिचारियै ॥
इहि बार बेरि कहुन न्रपति। राजन पोरि पधारियै ॥

छं० ॥ ३७६ ॥

दूहा ॥ मन्त्रिय राजन सिष्य सब। संबोधिय सब नाम ॥
आय परंतै अवसरह। पुरषहि सिझ्झै काम ॥

छं० ॥ ३७७ ॥

इक सुरतान अवाज सुनि। विय राजन ग्रह आय ॥
है आनंद बधाइयां। है घर चामंड राइ ॥

छं० ॥ ३७८ ॥

चामंड राय की माता की प्रशंसा।

सीला संगर मात तुहि। तिहज्जौ बीर पियाइ ॥
सिंघनि सिंघ सु जाइयौ। दंगे दाहर राइ ॥

छं० ॥ ३७९ ॥

राजा का कविचंद और गुरु राम को चामंड के पास भेजना।

तब बिचार न्रप संतुकिय। पठए सब तिहि ठाय ॥
आप राज फरमान दिय। कढ्ढौ लोह सुपाइ ॥

छं० ॥ ३८० ॥

गये चंद सामंत तहं। जहं चामंड वर बीर ॥
देष्यौ देव समान तहं। सूर सत्त रन धीर ॥

छं० ॥ ३८१ ॥

चामंड राय का कहना कि इस समय मेरी बेड़ी उतारने का क्या प्रयोजन।

ए सम राजन राज कौ। राज काज तुम जानि ॥
लाज उरै धरि रष्षना। कहि संजोगि प्रमानि ॥

छं० ॥ ३८२ ॥

जाहु सबे सामंत हो। कहो न्रपति प्रथिराज ॥
तां दिन मुक्यौ लोह पग। अब मोसों कुन काज ॥
छं० ॥३८३॥

कविचन्द का चामंडराय को समझाना।

कवित्त ॥ दाहिम्मा को फेरि। दियौ उत्तर कविचंद ॥
सकल सूर सामंत। सुनत चिचंग नरिंद ॥
नीसरनी असमान। तुहिज काली हर बेहर ॥
तू पांताल कुदाल। हथ्थ सत्ती ना लेयर ॥
दीपक पतंग जिम तुट्ठि के। सम रंगनमें मरन भय ॥
चामंड राय तिहि तुच्छ पग। लोह घल्लि चहुआन लय ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ लाज राज निकसन्न घन। अप्पा नैन दुराइ ॥
सामंता बर हुकम करि। कढ्ढौ लोहनि पाइ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

औलौ रष्षिन आखि करि। बह्लु बोलन बोलि ॥
ते रन जंगो बज्जिहै। ढीह्लौ हंदे ढोल ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कवित ॥ जे रन जोग जुसइ। ढोल बज्जै ढिल्लिय धर ॥
जस औजस तन मुक्कि। जोगि जूह संजोगि बर ॥
तनु जानै तिन मान। सूर अवसर कि मुक्कै ॥
सूर कित्ति ग्रहि जांय। सुबर अवसर क्यों चुक्कै ॥
चामंड राय दाहरतनौ। जुग्ग जात तन मंडियै ॥
तो भुज्ज अज्ज जोगिनि नयर। रोस छिमा छिम पंडियै ॥
छं० ॥३८७ ॥

दूहा ॥ से बेरि पग संमुहौ। से राजन पग लग्गि ॥
से ठट्ठ ठट्ठाइया। जानि उन्हइया अग्गि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ भट्ठी अग्गि अबुझ्झ। ठाढ़ि भग्गी सुरतानी ॥
तरुन तप्प गोरी नरिंद। हेवरन विम्र चढ़ानी ॥

चामंडारै भाग। समर रावर ग्रह आइय ॥
जंपि बीर प्रथिराज। दई सुरतान बधाइय ॥
लभ्भ चय लभ्भ दाहिम्म करह। मुगति मग्ग रावर दरसि ॥
सुरतान जुद्ध चहुआन रिन। टैन बीर चाढ्यौ उलसि ॥

छं० ॥ ३८९ ॥

दूहा ॥ पांमारां पुंडीरियां। कूरंभा जदूनि ॥
गुज्जरिया दाहिम्मियां। घर हस लग्गी दोनि ॥ छं० ॥ ३९० ॥

कबित्त ॥ जिहिं जहों जामानि। राज लग्यौ कूरंम्मां ॥
वीची राव प्रसंग। देव बग्गरी दुरम्मां ॥
गुज्जर रामह देव। जैत साहिब अबबूरा ॥
होइ अवारी होस। क्यों सुभग्गौ बंबूरा ॥
मुख जीह लोल बोलै बयन। राजन काज बरद्दिया ॥
पावै न पीर पंजर तनौं। मत पथ्थै भट्टह बिया ॥

छं० ॥ ३९१ ॥

दूहा ॥ तब तरिवारन बंटनो। इह बंटनी न देस ॥
मोसा बोलि न दाहिमा। होइ अपानै भेस ॥

छं० ॥ ३९२ ॥

इह बंटना न देस धर। इह बंटनौन लच्छि ॥
तन तर वारिन बंटना। चावँड राइ सु अछ्यि ॥

छं० ॥ ३९३ ॥

बंर बानै बंधै सकल। अप्प अप्पनै भाग ॥
ते बांधी सुरतान पर। घंगे घंगी पाग ॥

छं० ॥ ३९४ ॥

को बंधै ग्रहनी ग्रहन। को बंधै बिन मान ॥
ते बंधी सुरतान पर। मालिम सो चहुआन ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

चामंडराय का कहना कि राजा की पहिनाई बेड़ी मैं कैसे उतारूं ॥

जौ मंड्यौ न्त्रपपग्ग हम। सो किम सांहों हथ्थ ॥

न्रिप अपान पासन तजहु ।^कहौ चंद कवि कथ्य ॥

छं० ॥ ३९६ ॥

पुनः कवि चन्द का चामंड की वीरता का बखान करके समझाना।

कवित्त ॥ तें जित्यौ गज्जनौ । तूं जु अड्डौ हम्मीरा ॥

तें जित्यौ चालुक्क । पहरि सन्नाह सरीरा ॥

तें दल पंग नरिंद । इंदु ग्रहियौ जिम राहा ॥

तें गोरी दल दह्यौ । बार षट्टह बँन दाहा ॥

तेग तेग तुअ उंच मन । तंतो पास न मिल्हियै ॥

चामंड राय दाहर तना । तो भुज[1] उप्पर षिल्लियै ॥

छं० ॥ ३९७॥

तौ सज्जत गज्जनै । हक्कहै कंप उठें अति ॥

परै उचकि सुरतान । हरम हैहै आतुर गति ॥

तें जित्यौ परमार । पहरि सन्नाह सरीरा ॥

जा बूदल तें सहै । तें जुहीरा रघुबीरा ॥

पहु मीस राम हनुमान सम । तंतो पासन मेल्हियै[2] ॥

चामंड राय दाहर तना । तो भुज उप्पर षेलियै ॥

छं० ॥ ३९८ ॥

दूहा ॥ राजा मान पुंडीर कुल । तेहनौ पुत्र प्रताप ॥

से राजन पग लग्गिया । आज हनंदे पाप ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप । दरसि रावर बर भग्गा ॥

कप्पन बिरद कलंक । जीह किल कित्तिय लग्गा ॥

आहुट्ठा मझ्झ भ्रांमि । छित्ति छचौ परमानं ॥

हिंदवान तुरकान । सस्सि उग्गै जिम भानं ॥

औधूत राइ माया अडरु । गोरष रा गोरष्ष जिम ॥

बर तिथ्य तिथ्य रावर समर । मार[3] रूप भंजन बिक्रम॥छं०॥४००॥

---

(१) मो.-भुअ (२) मो.-ना मल्हियो।

(३) मो.-सार

पृथ्वीराज का चामंड कों अपनी तलवार देना।

दूहा॥ छोरि तेग न्रप अप्प कर। अप्पी हथ्थतिं सूर॥
लै चामंड सु बंधि द्रिढ़। तू धर रष्षन नूर॥

छं० ॥ ४०१ ॥

चामंड राय का प्रणाम करके तलवार बांधना और बेड़ी उतारना।

तब सामंत सुसिर धरिय। मुष जंपिय इह बैन॥
जौ सिर पर प्रथिराज है। तौ कित्तक गोरिय सैन॥

छं० ॥ ४०२ ॥

बेरी कट्टत चरन न्रप। नमित कियो तिहि सीस॥
राजन मनह प्रमोद करि। दैन कही बगसीस॥

छं० ॥ ४०३ ॥

जा न्रप रुट्ठे भय नही। तुट्ठै नह धन आस॥
ग्रहनि ग्रह नाहीं समथ। ता न्रप ह्थ्था प्रयास॥

छं० ॥ ४०४ ॥

पृथ्वीराज का चामंड राय को सिरोपाव और इनाम देना।

डेढ़ हजार तुरंग बर। हसती तेरह तीन॥
मुत्तिय माल सुरंग दस। राजन अप्पि नवीन॥

छं० ॥ ४०५ ॥

चीर पटंबर फेरि सिर। बज्जा बज्जन बग्ग॥
बर बरदाइ बरद्दिया। बोल समंगल लग्ग॥

छं० ॥ ४०६ ॥

चामंडराय के छूटने से सर्वत्र मंगल बधाई होना।

कवित्त॥ चीर पटंबर फेरि। बज्जि बाजिंच राज बर॥
अति अनंद मन चन्द। करै मनुहारि देव नर॥

राजा मानि पुंडीर। राजसुत बरन¹ दिषारिय॥
ता छंडन चहुआन। करिय सो मंच विचारिय॥
आनंद राज कुम्मार ग्रह। मातपष्य आनंद हुअ॥
रामंति सव्व पष्षी फिरै। भिरि चामंड सुवज्ज भुअ॥

छं० ॥ ४०७ ॥

दूहा॥ लोहानी पग कढ्ढिकै। लज्जानी पग बंधि॥
लज्जि लज्जि गुन लज्जि कै। तेग धरी भर कंध॥

छं० ॥ ४०८ ॥

घर घर मंगल बोलिये। घर घर दीजै दान॥
सें मुष धनि धनि उच्चरै। भल छोर्‌यो चहुआन॥

छं० ॥ ४०९ ॥

कवि का कहना कि लोह की बेड़ी के छूटने से क्या होता है नमक की बेड़ी तो पैरों में और राजा के आनकी तौष गले में आजन्म के लिये पड़ी है।

हथ्थ हथ्थ करि प्रेम की। पाइन बेरी लोन॥
गलै तोष न्त्रप आन की। छुट्यौ कहत है कोन॥

छं० ॥ ४१० ॥

लोक लज्ज ग्रह लज्ज उर। हठ न ग्रही रिस एक॥
लोह लँगर कढ्ढत चरन। लरन हथ्थ लइ तेक॥

छं० ॥ ४११ ॥

कुँडलिया॥ लरन हथ्थ गहि तेग बर। बोलि समीप प्रमोन॥
बर बंधन सुरतान को। रिन अप्पन चहुआन॥
रिन अप्पन चहुआन। कहै चावंड समेरी॥
लोहानी कर कढ्ढि। लज्ज बंधी बर बेरी॥
हठनि ग्रहन ना करै। करै निग्रह रन मरनह॥
तेगें सिपर जलाइ। देह रावल रन लरनह॥

छं० ॥ ४१२ ॥

(१) ए. कृ. को.-चरन।

पृथ्वीराज का चामंड को घोड़े देना। उन घोड़ों का वर्णन।

भुंजंगी ॥ गही तेग भू दंड सामंत राजी। दियौ बाज राजं सुजक्की सुताजी ॥
छबी रत्त स्याहं हथी जानि जंबू। रच्यौ रूप राकी पक्यौ जानि जंबू ॥
छं० ॥ ४१३ ॥
जरी जीन साकत्ति हेमं हमेलं। निसा न्त्रिम्मलं किस्न नच्छिच झेलं ॥
उचं कंध कन्नं नयनं न नासं। गनै रंभ रंभं सुधा स्याम सासं ॥
छं० ॥ ४१४ ॥
नषं मंडलं डंड संधं सुधारै। उवं पुट्टि मंमं दु पुट्टं उचारै ॥
दुमं इं छनं चाय ढारंत बायं। छिमा छच छाया तनै बाजि रायं ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कवित्त ॥ नटिय नट्ट जिम चपल। बदन जिम सरस सद्द कवि ॥
बग्गह मुनि मन गहिय। तिम सु उड्डिय सुरंग दवि ॥
इम चल्लिय करियार। तिम सुमुहरस मुह मिट्टिय ॥
तिष्षन तरुन कटाच्छ। तिम सुमन मोहन दिट्टिय ॥
अभिसार रसन उच्छाह जिम। तुंग प्रमत्त सुसील मय ॥
हिंसत[1] हसंत हरसंत न्त्रप। बाज राज दिन्नी तुरिय ॥
छं० ॥ ४१६ ॥
पवन पाय पूजयो। वेग पुज्जिय कवि चित्तह ॥
पिट्टि चाप पूजयो। पसम पूजिय नव नीतह ॥
पुच्छ चमर पुज्जयौ। कंध कैसनि पुजि केहरि ॥
स्रवन अग्र पुज्जयौ। अग्ग तिष्षह सुडभार सर ॥
पुज्जयौ जगत जिहि पूजयौ। सालिग्राम सुंदर सुद्रिग ॥
संभरिय तुरिय पुज्जिय जगत। षंजन नट भंट मीन म्रग ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

सूर्य्य के रथ के घोड़ों की चाल का वेग।

दूहा ॥ देषि अस्व दाहिम्म कौ। पुच्छि चंद चिन्नंग ॥
कहौ कित्त कत तौ षडै। रैवत रथ्थ पतंग ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

(१) ए. कृ. को. हिंसतह सतह।

कोस सहस नव षट्ट सय। अंपिनि अरध फुरक्क ॥
गयं नंगन कबिचंद कहि। अश्व क्रमंत अरक्क ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

सूर्य्य के रथ की संपूर्ण दिन की चाल।

गाथा * ॥ गुन चालीस अरब्बं। अट्ठ षरब असीयं लष्यं ॥
असीं कोरि परिमानत। दिन मानं कोस भानयं चल्लं ॥
छं० ॥ ४२० ॥

दूहा ॥ सो बीज राज दिन्नौं बगसि। मिलि मंगल गल लग्गि ॥
निसि निसान भेरिय सबद। जनु बीर जगावति बग्गि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

सब सामन्तों और रावलजी सहित पृथ्वीराज का युद्ध विषयक सलाह करने के लिये निगम बोध स्थान पर जाना।

कवित्त ॥ अप्पि न्त्रपति इयराज। कढ्ढि बैरी बर छंडे ॥
हरनि सुनौ सुरतान। इला अग्गर भर मंडे ॥
मत्त सूर सामंत। मिलिव मत तत्त विचारौ ॥
सबलां सों संग्राम। मंत बिन मंत सुहारौ ॥
चित्रंग राव रावर समर। समर विद्धि जानै सकल ॥
बिय निगम बोध धंनुह सुदिति। मत्त राज मोहै अकल ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

एक शिला का डीलना और सब का विस्मित होना।

दूहा ॥ धर धर धरनिय धरहरिय। कुंडलि किय फनि पुच्छ ॥
तेग पकरि सामंत तब[1]। मिलि बर घल्यौ मुच्छ ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

कवित्त ॥ सिला एक पाषान। हथ्थ तीसह बिय लंबिय ॥
दोइ दसकर चवसठ्ठि। सठ्ठि अंगुल उदरंभिय ॥
ता नीचे क्रंदरा। तहां को सूर निद्रामै ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

(१) ए. कृ. को.-सब।

ता उप्पर तिहि दिवस। राज बंज्जै सादानै॥
आघात सुनत करवट्ट लिय। बज्जे बज्जावन गुरिग॥
अचरिज्ज[1] करिग स्लामंत प्रभु। भट्ट सहित पारस फिरिग॥
छं० ॥ ४२४ ॥

इक्क कहै भुअकंप। इक्क कहै सेसह हल्लिय॥
इक्क कहै उठ्ठवै। याहि उठवत श्रम षुल्लिय॥
छह लंगर गर घल्लि। ग्राव लीनौ उच्छंगह॥
मुष अनिंद चष निंद। अग दिष्यौ बहुरंगह॥
प्रारब्धि चंद पुच्छै तिनहि। कहं सुजाम कहं उप्पनिय॥
को मात पित्त को[2] नाम तुम। किम सुधान इह नींद किय॥
छं० ॥ ४२५ ॥

शिला के नीचे से एक भीमकाय वीर का निकलना। कविचंद का पूछना कि तुम कौन हो।

विराज॥ बरंन्नति स्यामं, समंरत्ति कामं। नषं पंडि पीतं, भयं भीम भीतं॥
छं० ॥ ४२६ ॥

जगं जानु रत्तं, हवी जानि लत्तं। कटिं नाभि नीलं, उरं सु भ्रपीलं
छं० ॥ ४२७ ॥

चषं धूमरूपं, मुषं जोग भूपं। भुजा ग्रीव भूरी, सुरं सिद्धि मूरी॥
छं० ॥ ४२८ ॥

सिरं सेत नेतं, विरागी पवेतं। रजंताम नेनं, सुसातुक्क हैनं॥
छं० ॥ ४२९ ॥

डकारंत डकं, द्रिगं कंप हकं। महाबीर बल्ली, दया ध्रम्म पल्ली॥
छं० ॥ ४३० ॥

बरं बप्पुजीहं नको लोपि लीहं। गयं गात गेनं, बुलै चंद्र बेनं॥
छं० ॥ ४३१ ॥

बरदायि बाचं, कहै बीर[3] साचं। * * छं० ॥ ४३२ ॥

(१) मो.-अरज।
(२) मो.-किहि। (३) ए. कृ. को.-कांवि।

बीर का कहना कि मैं शिवजी की जटाओं से उत्पन्न बीर भद्र हूं। बीरभद्र का पूछना कि यह कोलाहल क्या हो रहा है।

कवित्त ॥ दच्छ प्रजापति जग्य । रुद्र निद्रा सति संभरि ॥
तनु तिनु जिमि जग्गयौ । जलन जग्गिय मन मंजरि ॥
हय हय हय त्रिभुवंन । नाग सुर नर गंध्रव गन ॥
भिरि भिरि नंदिय सुभग । भइय पुक्कार छंडि रिन ॥
भयभीत भूत वेताल घन । कपिल कंपि कैलास डरि ॥
तिहि त्रिसल तेज लग्गिय नयन । जट जुगिंद पिट्टिय सुफिरि ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

मो जटा जनम तिनु दिनह । नाम मुहि बीरभद्र धरि ॥
तात नाम त्रिपुरारि । जग्य विध्वंसि सीस हरि ॥
सतजुग संकर पनिय । त्रेता तुंबालिय ॥
द्वापर सुम्भर सलित । धम्म धरनिय प्रतिपालिय ॥
आनन्द निंद जोगिनि पुरह । काल नाम कलजुग्ग लहि ॥
आवत्त सोर फट्टै श्रवन । किम सुसोर कविचंद कहि ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का कहना कि युद्ध के लिये चामंडराय की बेड़ी खोली गई है उसीके आनंद बधावे का शोर है।

इह सुसोर सुनि स्वांमि । इन्द्र वृत्ता सुर लग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि । राम रावन घर भग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि । पंड कौरव फट्टै अभु ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि । जरा सिंधव जद्दव प्रभु ॥
इह सोर स्वांमि सामंत मिलि । सुपति साह गोरिय बयर ॥
चावंड राइ कढ्यौ लरन । इह सुसोर ढिल्लिय नयर ॥
छं० ॥ ४३५ ॥

बीरभद्र का कहना कि मैंने बड़े बड़े युद्ध देखे हैं यह क्या युद्ध होगा।

इइ मनुष्य मत्ताईं। देव देवासुर दिष्षिय॥
से रंभातारिका। जुद्ध रोजह्न परष्षिय॥
रामाइन मंडलिय। मग्ग मागध मँधाता॥
मान तुरंग दुरजोध। पथ्थ पंडव छह भ्राता॥
बरदाय द्रुग्ग द्रुग्गह सुजिय। भट्ट जाति जीहं दुनौ॥
सा भ्रम्म जुद्ध हिन्दू तुरक। कथ समंत ताथें सुनौ॥
छं०॥ ४३६॥

कबि का कहना कि आपकी देव संज्ञा है आपने देवताओं के युद्ध देखे हैं यह युद्ध देखकर भी आप प्रसन्न होंगे।

तुम देवह समदेव। जुद्ध देषैति सयाने॥
ए सामंत उमंत। झझझ देषत बिरुझानै॥
इन आवध आवधै। झक बज्जै झक झाइय॥
उत्तमंग उत्तरै। सीस हक्कै धर धाइय॥
जित रुधिर बुंद कंदल परहि। ते कंदल उठ्ठहि भिरन॥
उन बीर संग तुम धीर हुअ। निमिष नेह नच्चै फिरिन॥
छं०॥४३७॥

देष देवानहि जुद्ध। ते पुब्ब देषे पुरषारथ॥
पंन्न बीर अति सौम। धीर देष्यौ घट भारथ॥
देषि बीर मनि[1] हसिव[2]। कही मन्नौ नहि सच्चौ॥
उत्तमंग उत्तरै। सूर सथ्थह होय नच्चौ॥
बज्जै बिसाल असिवर निझर। सिव समाधि साधक घुलिय॥
जे पुब्ब देव भारथ दिषिय। दिषि भारथ चिंता डुलिय॥
छं०॥ ४३८॥

तुम मनुछ गति देव। बोल बोलौ मनुच्छ सम॥
में देषे जदु महिष। तौ न नच्चयौ छुट्टिय भ्रम॥

(१) मो.-थनि। (२) ए. कृ. को.-हसवि।

घरी एक भै भीत। एक आचिज सुनि बीरं॥
रगत बीर जसमान[1]। खच्छि दह होइ सरीरं॥
अचरिज्ज मेर परबत ढहै। धर हल्लै पटतार बर॥
कालक रूप काली धरा। सुपनि बीर दिष्यौ समर॥

छं० ॥ ४३९ ॥

वीरभद्र का कहना कि मुझे युद्ध दिखाने वाला दुर्योधन के सिवाय और कौन है।

दूहा। तब जग्गि बीर मंडिग नयन। बयनंह अलप प्रबोध॥
मोहि जगावैन जुद्ध को। बिन दुरजोधन जोध॥

छं० ॥ ४४० ॥

रुधिर बूंद कंदल परहि। असिवर सज्जिय हथ्थ॥
कहैं बीर न्रप बीर कहि। अमितचंद इह बत्त॥

छं० ॥ ४४१ ॥

कवित्त। जग्गि बीरं भैभीत। मुषं ज्वाला हवि छुट्टिय॥
डक डकार कंपै त्रिलोक। कपि कंधर जग षुट्टिय॥
छिन एक छिमि समूह। बीर हुंहुं उच्चारं॥
बिन दुरजोधन जोध। जोध दिष्यो न बिचारं॥
आमंत मनुष आमंत सुनि। पुब्ब कथा दुरजोध सुनि॥
करि रजज जग्ग यगमन्न बर[2]। मन जग्गत नौसान धुनि॥

छं० ॥ ४४२ ॥

दुर्योधन की वीरता और हठ रक्षा की प्रशंसा।

जिहि दुरजोधन जोध। संधि मानी न दैव बलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। भूमि दीनी न जीव कलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। दवा अब दसन परषिय॥
जिहि दुरजोधन जोध। चीर कढ्ढत नन रष्यिय॥
भष्यिया भष्य[3] पर भूमि पर। धर समान धर नंषयौ॥

(१) मो.-रगल मज्ज बीर जस मान।　　(२) मो.-करि राजगाह गमन्न बर।
(३) ए० कृ० को०- भेष।

संकल कलप्प रुधि मंस सों। पंड भोग भुत्र चष्षयौ॥

छं० ॥ ४४३ ॥

महाभारत के युद्ध की संक्षेप भूमिका।

प्रान रष्षि रा पंड। डंड आरन्नि वास किय॥
हेत रष्षि बलिराय। सपत पाताल जाय जिय॥
भगत रष्षि प्रहलाद। तात दिषि नष्ष विदारत॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। दैत जुरि जग्य बिगारत॥
धन धवल गरुव गंधारि उर। गदा कदंब बपु अटल धुअ॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। मान रष्षि दुरजोध भुअ॥

छं० ॥ ४४४ ॥

न को जियत दिष्षियन[1]। मरन दिष्षियै न लोई॥
मात ग्रभ्भ जनमीय। काम अवसर जुग सोई॥
क्रोध लोभ माया न मोह। तार तंची जिड भोगी[2]॥
विक्रम क्रम नच्चियन। जोग नंचै विधि रोगी॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। बहुत काल इहि थान भय॥
हा हंत हंत तत गुर गनिय। सुनो भट्ट तत सत्तलय॥

छं० ॥ ४४५ ॥

भीषमजी के विषम युद्ध का संक्षेप वर्णन।

भुजंगी। जिनै जोध दुरजोधनं जुद्ध कीनौ। जिनै दीहनौ दूनकौ ब्रत्तलीनौ।
जिनै अप्प अप्पं प्रतंग्या निवारी। जिनै नंदनंदं[3] परं पैज पारी॥

छं० ॥ ४४६ ॥

जिनै चक्रधारी कियौ चक्ररूपं। जंही जांहि रुंधे तहीं तांह जूपं॥
जबै पथ्थ रथ्थं चषं लोपि कोपं। कियौ पंड पंडं रथं बान धोपं॥

छं० ॥ ४४७ ॥

---

(१) ए० कृ० को—दिष्षिगन। (२) मो० जोगी।
(३) मो०—नंद नंदी।

हनूमानं पव्यौ[1] पताकी पतंगं। हन्यौ सेत बाजी जुत्रं जोगि भंगं॥
अपं भोन कव्यौ नगं जीव गव्यौ। दियौ देवदत्तं धनुजौं व बज्यौ॥
छं० ॥ ४४८॥

कियौ छीन छीनं सनाहंति छीनं। जटूं देवबादी रुधिरं व भीनं॥
सुभं स्याम रत्तं सु स्यामं सुदेसं। मधू माधवें जानि माधुज्य केसं॥
छं० ॥ ४४९॥

जकी जोगमाया बकी थान थानं। कहैं देव देवान जानं न जानं॥
न जानं न जानं न आनंति ज्ञानं। न तंची न जंची न मंची न मानं॥
छं० ॥ ४५०॥

हयंती हयंती हयंती प्रमानं। भरंती भरंती घरंतीति बानं॥
रथंती रथंती रथंगं सुपानं। * * * * छं० ॥ ४५१॥

कुरं षंडषंडं षलं षंड जूरं। सुरंगं सुरंगं बरं काल रूरं॥
ततथ्थं ततथ्थे तथं न्रत्य वारं। निरंषंत फट्टं करंतं उधारं॥
छं० ॥ ४५२॥

चवठ्ठी चवठ्ठी चवै सिंधं पूरं। बिताली बितालं करै तार तूरं॥
फिरै जोगिनी जोग माया सतथ्थं। ढुंढे लोक लोकं चलोकं सुनथ्थं
छं० ॥ ४५३॥

स्वयं ब्रह्म पूछ्यौ धरै ध्यान ईसं। दिषे देव देवांग[2] भारथ्थ रीसं॥
तहां आय दिष्यौ स्वयं ब्रह्मनाथं। कियौ वज्र रूपं कियौ वज्र हाथं
छं० ॥ ४५४॥

पथंतं पथंतं पथं पार पारं। झरंतीं झरंती झरंतीति सारं॥
कथंती कथंती कथं मार मारं। * * छं० ॥ ४५५॥

बजंती बजंती बजं[3] घाय घायं। नवंती नवंती नवंतीत पायं॥
लुटै[4] पट्ट पीतं कवी तेज वान्यौ। धवै सिंघ सैलं महामत्तजान्यौ॥
छं० ॥ ४५६॥

करै चक्र वक्रं उनंके प्रवानी। भुले भट्ट नांही चितं मत्त बानी॥

(१) ए० कृ० को०—छट्टयौ। (२) मो०—देवंज। (३) मो०—वजंती निघायं।
(४) ए० कृ० को०—तुटै।

उचै चरन उठ्ठै लगे भूमि आवै। घिन्नै बीर अप्पै जु पाताल पावै॥
छं० ॥ ४५७ ॥

कटी पट्ट छूटी लुथ्यौ पट्ट पीतं। नसंभूल बंभू भया भीम भीतं॥
छं० ॥ ४५८ ॥

दूहा ॥ अभय भीति भीगम सुभर। इष दिय अरघ उदार॥
आनु आनु अवनिय भरन। कह्यौ संतन राजकुमार॥
छं० ॥ ४५९ ॥

भै भ्रित रोम सभ्रित भर। तारस लागि क्रिसान॥
दसों दिसिनि द्रिगपाल डर। मै अरन्य ब्रिह्मयान॥
छं० ॥ ४६० ॥

वीरभद्र का कहना कि ऐसा विकट युद्ध देख कर तब से मैं सोया हुआ हूं।

छित श्रोनित छिंछै सुतन[1]। सुतन लागि चष दून॥
जनों अमर पूजहि अमर। बर बंधन परसून॥
छं० ॥ ४६१ ॥

सुकरि ग्यान सुतौ सुमरि। हिय धरि ध्यान गुविंद॥
मंद हास मंडिग बयन। कहि कविंद[2] कविचंद॥
छं० ॥ ४६२ ॥

तल वैतल धुक्किय धरनि। धारस चक्र लिय धाय॥
सुर नर नागनि बंधि घन। भै भग्गै अकुलाइ॥
छं० ॥४६३॥

चरन नीच उंचिय अवनि। कमट पिट्ट दर.नाग॥
चकित अट्ठ द्रिगपाल कुल। मुष चिक्करि भै भाग॥ छं० ॥४६४॥
प्रलै जलह जल हर चलिग। बल बंधन बलिचार॥
रथ चक्कह हरि कर करिय। परि पर बत परतार॥
छं० ॥ ४६५ ॥

(१) ए० कृ० को०--सुवन। (२) ए० कृ० को०--कोहिद।

बीरभद्र की सुसुप्त अवस्था का भयानक भेष।

भुअंगी ॥ धरे ध्यान ह्वतौ बली बीरभद्रं। मनों पेषि आकास विंदं कविंद्रं ॥
हयं जोय एकं करं चक्र एकं। प्रलै काल सज्ज्यौ मनों ईस वक्रं ॥
छं० ॥ ४६६ ॥

भुअं भार भारं सुभारं सुनेनं। रिसा रत्त अरविंद संबै सबैनं ॥
सषा भीर हुई धरं भार भानं। चिषा छच छचीं न छची दिदानं ॥
छं० ॥ ४६७ ॥

भिगू पत्ति जान्यौ सु तान्यौ धनुक्कं। करों हच जानी सुतानी षिनंकं॥
जुरी डंड षंडं पिता माहि मुक्क्यौ तुमैं आनि पंडं पराकाम चुक्क्यौ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

रजं ताल बौंछी रथं बंधि उंचं। सिधं सस्च कढ्ढौ धरा पारि नंचं
महारथ्थ सारथ्थ पारथ्थ पानं। लघुं लाघ विद्या सुपूजै गियानं ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गुनं दिट्ठ लोनं[1] अधानं धरानं। क्रिपालं क्रिपाकी क्रिपाके निधानं॥
मुषं तो मुकंदं मुकत्ती प्रसादं। प्रतंग्या प्रमानं कली क्रत्ति वादं ॥
छं० ॥ ४७० ॥

अभेदं सरीरं द्रसं तोपि नैनं। क्रितं लोक सोकं भयं भै अभैनं ॥
क्रितं पुन्य पुब्बं न जानौ गुसाई। ग्रसै काल व्यालं भए को सहाई ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

दूहा ॥ मै दिठि दिट्ठि निहट्ठि हरि। धरिं मिंट्टिय निज निंद ॥
जिहि सुकंज ह्वरति हियै[2]। बिसरि जाइ तेगंद ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

कबि का बीरभद्र से कहना कि आप हमारे राजा की सभा में चलकर सलाह सुनिए क्योंकि आप तीन काल की जानते हैं।

कहंन चंद उद्दिम कियौ। सुनन बीर धरि कान।
भाषा सब्ब परष्षहुं। नव रस सब्ब सुरान ॥ छं० ४७३ ॥

(१) को.-तोनं। (२) ए. कृ. को.-तिहिजिये।

तुम भवस्य जानहु सकल। अकल अपूरब बत्त॥
सुमत बैठि सामंत सब। सुनहु तौ कहूं कवित्त॥
छं०॥४७४॥

कबित्त॥ अगह मगह दाहिमौ। देव रिपुराइ षयंकर॥
कूरमंत जिन करौ। मिले जंबू बै जंगर॥
मो सहनामा सुनौ। एह परमारथ सुझझै॥
अष्षै चन्द बिरद्द। बियौ कोइ एह न बुझझै॥
प्रथिराज सुनवि संभरि धनी। इह संभलि संभारि रिस॥
कैमास वलिष्ठ[1] बसीठ बिन। म्लेछ बंध बंध्यौ मरिस॥
छं०॥४७५॥

दूहा॥ सभा बत्त इह चंद कहि। सुनिय बीर धरि कान॥
राजन मन अंदेस धरि। जु कछु बिद्धि न्रिमान॥
छं०॥४७६॥

बीर का जंभाई लेकर उठना और पृथ्वीराज की सभा में जाकर बैठना तथा सामन्तों के नाम पूछना।

कबित्त॥ सुनिय बत्त कबिचंद। बीर अदभुत्त मंनि मन॥
एह बत्त आचिज्ज। सूर सामंत कहिय जन॥
उठ्ठ बीर करि जंभ। अंग मोरिय उत्तानह॥
जाय बयट्ठौ पास। सूर सामंत सभा महि॥
पुच्छी सुबत कविचन्द सों। अहों चन्द बरदाय सुनि॥
लै नाम सूर सामंत सब। मोहि दिषावहु मंत गुनि॥
छं०॥४७७॥

कविचंद का सामन्तों के नाम बताना और जामराय यद्दव का कहना कि कैमास के मरने से मुसल्मानी दल सहजोर हो गया है।

इ जैत राव चामंड राव। इह देव रा बग्गरिय॥

(१) ए. कृ को-बासिष्ठ।

इह बलिय राव बलिभद्र। राम कूरंभ संभरिय॥
इह पीची राव, प्रसंग। जाम जादौं भर भष्यिय॥
रवनि[1] राज पहु प्रान। सांम दानह धर रष्यिय॥
सामंत मंत कैमास बिनै। बल बंध्यौ सुरतान दल॥
सामंत सिंघ दुज्जन सया। दया न किज्जै काल षल॥

छं०॥ ४७८॥

चामंडराय का कहना कि गत पर सोच क्या, जो आगे आई है उस पर विचार करो।

कहै राव चामंड। जाँम जदौं सुनि बत्तियं॥
गत्त सोच जिन करौ। सोच भग्गै बल छत्तिय॥
सुष अंतर दुष होइ। दुषह अंतर सुष पाइय॥
सुष दुष बंध्यौ जीय। जीव बंध्यौ मन गाइय॥
मन्न स्वांमि भ्रम्म बंध्यो रहै। स्वामि धरम बंधिय मुगति॥
सा मुगति बंध सुरतान दल। मथित्त सूर कहौ जुगति॥

छं०॥ ४७९॥

जामराय का कहना कि तुम्हारी तो अकल मारी गई है इधर देखो सौ में से सात बाकी हैं।

पुनि जंपै जद्दौं जुवान। चामंड राव सुनि॥
तुम पग लग्गो लोह। लोह लग्गै गत मत[2] हनि॥
साम दान अरु भेद। बंक तौ कंक करिज्जै॥
कंक बंक भरि होह। बंक भर भूपति छिज्जै॥
सुरतान षान षुरसान पति। दल बद्दल पावस मनौं॥
प्रथिराज साथ सामंत सौ। तिनमहि छह सतह गनौं॥

छं०॥४८०॥

चामंडराय का बचन।

तब जंपै चामंड राइ। जादौं जम बत्तिय॥

(१) ए० कृ० को०—वरनि। (२) ए० कृ० को०—मत्तनि मंतनि।

हम पग लग्गी लोह। लोह लग्गी गत मत्तिय ॥
जौ तो ह्वं तूं कहै। तो राज को काज विनासै ॥
अद्व रयनि उठि जाहि। करै दुज्जनपुर वासै ॥
हम पगनि बहुरि बेरी भरौ। लरि न मरैं जहों कहै ॥
जहं जहं सुदैव कुल संसवै। तहं तहं पंजर पुरस है ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

वलिभद्रराय का बचन।

तब कहैं राव बलिभद्र। काम क्कारी मंतानिय ॥
सबलां सों संग्राम। राज भज्जै राजानिय ॥
म्है म्हां कै ढोलरै। ढाल ढोरी ढुंढारी ॥
कूरंभा ऊपरें। डाढ़ ढिल्ली उच्छारी ॥
औरैं सुमुष्य अंसर उरी। मन साषी जानैं जनां ॥
असुमेध जग्य यौ हैं तनौं। जनमेजै बरज्यौ घनां ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

रघुवंस राम का रात्रि को धावा करने की सलाह देना।

बर बीरह रघुबंस। राम रति बाह उचारिय ॥
जीव संक छची अभ्रम्म। मिलि जु संकर पह सारिय ॥
आगैंही इहि बंस। बाच दिठ मरनह डिठ्यौ ॥
सांम भ्रम्म समलीह। अजै गिरि में रचि गठ्यौ ॥
तुट्टै कमन्ध उट्ठै धपिग। बिपथ सीस हंकारयौ ॥
प्रथिराज संग बन्धौ मरन। परिय न्रपति अरि धारयौ ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

रे गुज्जर गांवार। यव्व तजि सज्जि सुमंतं ॥
मोहि ईस आसीस। लागि अंगन रवि रत्तं ॥
मरन सोय अरि हरन। सेन साहाब सबन मथ ॥
भान रथ्थ पंचि है। देव देषै सु रुक्कि रथ ॥
भारथ्थ थंभि रष्षै अरी। रतन रष्षि बर रतन लजि ॥
चहुआन आन सुरतान सों। सामर[1] सजि लज्जी बरजि ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सागर।

बलभद्रराय का बचन।

फिरिं उच्चरि कूरंभ। तंत मंतह उच्चारिय ॥
जै पुब्बह बन्धान। टरैं सनबन्ध न टारिय ॥
व्यास बचन जनमेज। सत्त जानी असत्ति करि ॥
क्रम बन्धन पै आहि। मन्ति आयौ सुमंडि घरि ॥
आचिज्ज हरिय उत्तर दिसा। मद्धें बड़वानल बिसहि ॥
बरजयौ सत्तवचननि तबै। तात जानि नाही असहि ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

सुनि अचिज्ज है हेरि। राज संमुह उच्छाइय ॥
हरि दिष्षी मनु फिरै। जग्य बड़ बाजि बसाइय ॥
बड़ बन्धा करि बन्ध। उंच उंबी जु सेमेरी ॥
व्यास बचन करि असति। जग्य जंपन कहि फेरी ॥
सोइ जग्य कियौ पहु पंडकुल[1]। तरुन बीर बभन्न बरि ॥
सनमंध जीव अुब्बह सुगति। सो न टरै टारीय टरि ॥ छं० ॥ ४८५ ॥

दूहा ॥ ए उदार लज्जिय सुजल। कबि बंधि उट्ठिय आस ॥
मरन सुलज्जी बंधयौ। जंपि उदार प्रयास ॥
॥ छं० ॥ ४८६ ॥

रामराय बड़गुज्जर के बचन।

कबित्त ॥ कहै राय रामदे। राइ रावत अज्जूना ॥
हैं हथ्थी नौसाज। राज[2] लद्धौ पज्जूना ॥
सामंता उभ्भार। जुद्ध अथ्था सथ्थानी ॥
सौ अग्गानी सट्ठि। सट्ठि आनी पंगानी ॥
म्हें गामी गुज्जर गब्बिहयां। हंसाई हंसाइयां ॥
रतिवाह देहु सुरतान दल। रषि राजन लगि पाइयां ॥
॥ छं० ॥ ४८७ ॥

लुम भोरें भीमकै। रत्ति सोभ्भति ज्यों जित्तिय ॥
ज्यों दुज भोरें अंब। घाय धत्तूरस पत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-पहुपंग कुल। [२] ए० कृ को०-रात।

आसामी असपत्ति। लाष कुरंकार[1] चढाइय ॥
हस्तीनी चिक्कार। फटै रासभ उरभाइय।
पुंडीर राव भग्गौ भिरां। जे सुरतान बंधाइया ॥
आभंग जंग[2] अनभंग भर। ते कनवज्ज जुझाइयां ॥ छं० ॥४८८॥

चामंडराय का रामराय को व्यंग बचन कह कर हँसी उड़ाना।

दै गारी गुज्जरह। राय चामंड कहानौ ॥
ए जादौं कूरंभ। जिय न बंछै सु सदानौ ॥
षीचौ राव प्रसंग। चोर बंधे सुपुराना ॥
ते बीरंग बिडार। डाक बज्जै उभ्भाना ॥
गोयंदराज बोला बरै। महिल केलि कलपंत किय ॥
पंजाब पंच पंचह सुपथ। जात गात रष्यौ सुजिय ॥
॥ छं० ॥४८९॥

दूहा ॥ लछ बल छुट्टे पंग पहि। सत छह छचनि छच ॥
समर सगप्पन देव तन। कहौ न मुह भरि तच[3] ॥
॥ छं० ॥ ४९०॥

सब लोगों का हँसना और बलिभद्रराय का सबको धिक्कारना।

कवित्त ॥ तब सुराव बलिभद्र। हथ्थ जद्दों दै धारिय ॥
बड़ गुज्जर दाहिमा। बोल लगै अधिकारिय ॥
को सेवक को सांई। कोन भर धर किन षाइय ॥
जेहुं ना घर जरै। हाससे कै को आइय ॥
सनमंध राय सगपन कियौ। पच्छै को केही कहै ॥
सहगवन राज सुरपुर करै। ढोली कछु वासन लहै ॥
॥ छं० ॥ ४९१ ॥

[१] ए० कृ० को०-साकुर। [२] ए० कृ० शो०-बुझ्झ०।
[३] ए० कृ० को०-बत्त।

रामराय यादव का चामंड की चिघ्घी उड़ाना।

तब कहै जैत पंवार। साम ध्रम्मह इन जानिय॥
करन अग्गैं द्रोपदी। चीर दुस्सासन तानिय॥
पिता दोष जान्यौ न। सेव अंगद घनमंडिय॥
बंधु दोष बेरी प्रमान। राव चामंडह छंडिय॥
जो दोष सामि तुछ उप्परैं। काम दुष्ष बहुं करं॥
परसंग राव षीची सुनैं। मुक्ति राज छंडिय बरं॥
॥ छं० ॥४९२॥

चामंडराय का गुस्से होकर जैतराव की तरफ देखना।

दूहा॥ चिसल तेज लग्गी बिभुअ। चषरता हबि जान॥
जैत राव बरजौ इन्है। इकटिह देलवियान॥
छं० ॥ ४९३॥
इनं कंठन दिल्लिय नगर। इन कंठन लगि राज॥
इनं आवधु काढैं न्त्रपति। साहि आज कौ काज॥
छं० ॥ ४९४॥

जैतराव का दोनों के शान्त करके राजा से कहना कि लोहाना से पूछिए?

कबित्त॥ राज काज पामार। सिंघ उच्चार वार तिहि॥
हों जादों जामानि। वल्लिय बलिभद्र बार इहि॥
वह गामी गामार। राम रति वांह सुजंपै॥
ससि षंडौं षुरसान। अधर गुज्जर ग्रह जंपै॥
न्त्रिघात पात भज्जैं सयन। गहन राज रवि उग्रहै॥
आजान बाह पुच्छौ न्त्रपति। स्वामि ध्रंम सिर न्त्रिब्रहै॥
छं० ॥ ४९५॥

लोहाना का कहना कि जहां रावलजी उपस्थित हैं वहां और कोई क्या कह सकता है।

तब लोहानौ आजान। बौह बह बह बक्कारिय॥

[१] मेंः-एक टह दिषालेयाँ पान।

समर सिंघ रावर। समुष अग्गै हक्कारिय॥
तुम सुधरम राजन। अनेय लज्जा अधिकारिय॥
जो अमंत सामंत। ताहि मंता उत्तारिय॥
दस लष्य भष्य सुरतान दल। तनु तुरंग उत्तंग बर॥
रुधि मंस अस्ति बस प्रान तुम। कन पिसान दूषहि सुकर॥
छं० ॥ ४९६॥

पुनः लोहाना वचन।

तब चित्रंग नरिंद। चिंत चिंता चिंतानी॥
भव भविष्य निम्मयौ। ब्रह्म जानै न बिनानी॥
तुम अजाब अंगवनि। जंग सुरतान विचारिय॥
रत्ति बाह दिन बोहु। कलह केली सु सुधारिय॥
सुभ थान प्रान पतिसाह कौ। राज पान संमुह लरै॥
बत्तीय बिकत्ति जंपै सुकवि। बहसि बहसि बुल्ल्यौ बुरै॥
छं० ॥ ४९७॥

चामंड राय बचन।

कहै राव चामंड। अस्ति कर दुष्पिन सागर॥
काली कर दुष्पैन। रकत वर जोगिनतावर॥
इन्द्र आदि दुष्पैन। पंफ प्रव्वत्त प्राहारै।
चंद हथ्थ दुष्पैन। गुड़ तारक्क वीचारै॥
यक्षैन हथ्थ वर करन सुत्र। मंस काज विभ्भूत बर॥
संग्राम काम कारन भिरन। सो न थकै रजपूत कर॥
छं० ॥४९८॥

पृथ्वीराज बचन।

पहुमि ईस पलटोस। रोस तजि रहसि बिचारिय॥
प्रिथा कंत सीमेस। तनं हँसि हँसि दिय तारिय॥
निसा अड्ड वत्तरी। देव कंदल नहि पिष्षै॥
हम मनुष्य तन रूप। कित्ति कहि कहि कह भष्षै॥
धवली सुरेंन धवली दिसा। धवल कंध संनमुष लरहि॥

सोमेस आन सुरतान सों । जौ न जुद्ध इत्तौ करहि ॥

छं० ॥ ४९९ ॥

लोहाना आजान बाहु वचन ।

अद्ध रयन अंतरिय । जाम जामानि भतारिय ॥
सामंता रौ साथ । अरध चढ़ि[1] अरध उतारिय ॥
मुक्कि बान कम्मान । तुंग तरवारि कटारिय ॥
हथ्थ[2] घल्लि सिर मंडि । रुद्र लोहं उच्चारिय ॥
आजान बाह इम उच्चरै । बावारौ लंबी भुआं ॥
प्रथिराज काज इक्कै सरै । पै चित्रकोटि रावल दुआं ॥

छं० ॥ ५०० ॥

प्रसंगराय खीची वचन ।

विहंसि राव परसंग । पिजे षीचौ चमरालिय ॥
राज नेन दिय सेन । बयन बुल्ल्यौ बेढारिय ॥
रे गुज्जर रे जैन । अरे चावंड राइ सुनि ॥
राजादों कूरंभ । बलिय बलिभद्र सीस धुनि ।
सुरतान छच अनछच करि । राज सीस छचह धरौं ॥
इह समर सिंघ रावल सुनै । जौ न जुद्ध इत्तौं करौं ॥

छं० ॥ ५०१ ॥

चामंड राय का वचन ।

षिझ्यौ राव चामंड । चित्त लग्गि चय भूअ बरा ॥
अबर मत्त सामंत । बोल बौलंति मत्ति धरा ॥
राज मद्द धन मद्द । मद्द जोबन घन घारौ ॥
सबै मद्द उत्तरै । पग्ग सुरतान सुभारौ[3] ॥
जे होय सूर सूरह सुबर । निपन सूर जुद्धं जई ॥
बोले न बेंन समझे घनं । संग्रामह अरि हंकई ॥

छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चछ । (२) ए० कृ० को०--हाथ्थ वंध गर घल्लि ।
(३) मो०—सुभारौ ।

बरहमंड चामंड। षग्ग उच्चरिग मंत मह ॥
षग्ग मग्ग अन दग्ग। भ्रम्म स्वामित्त रत्तरह ॥
उमरि साहि बिधि बड्ड। छिनन इत उत बर बज्जै ॥
टरै न द्रिग टारंत। बीर गाजै धर गज्जै ॥
नर मंत देव मंडल मुषह। सुषह सद्द अध अद्ध हुअ ॥
बर बरै बीर दाहर तनौ। रहति चंद मन्नेति धुअ ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

जैत प्रमार बचन।

कहै जैत पामार। बार बिग्गरी तुम्हारी ॥
कही सुनी चामंड। जाम जहों अधिकारी ॥
अप्प पान तोलियै। सेन सुरतान निहारौ ॥
मवन मंत चुक्कियै। धरम छचौ जिन हारौ ॥
सर बर सुबीर[1] संभरि धनिय। मुहि प्रतीत राजन तनौ ॥
जै अजै भाग भूपति बढ़ै। पै चढ़ै धार धारह धनौ ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

गुरुराम प्रोहित का बचन।

तबै कहै राम गुर राज। सेन तोलौ राजानौ ॥
सुनौ सूर सामंत। मंत कलहंत प्रमानौ ॥
किं जानै किं होय। सूर उट्ठै ढिल्लानौ ॥
उत्तराधी उत्तरै। जाय संमंद साहानौ ॥
भज्जै भरम्म चहुआन कौ। मंत मझ्झ कलहंत भौ ॥
जानहि न जुद्ध बंभन मरन। इन महि छुट्रिय सग्ग भौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

देवराज बग्गरी बचन।

दैव राज बग्गरी। बीर बीरह बरु बंध्यौ ॥
करौ जु कोइ करि सकै। साम दानह मिलि संध्यौ ॥
मोहि राज प्रथिराज। काज केवल कलहंतिय ॥

(१) मो.-रस वर सुवर

जंच जोर सुर सारि। सार भग्गै रहि तंतिय॥
जीवंन हथ्थ तुम सथ्थ सुर। तनक लाज दुहु भुज धरौ॥
मो बुझ्झि जुझ्झि संमुह लरौ। न लरौ तौ फुनि पच्छै मरौ॥
छं० ॥५०६॥

गुरुराम बचन।

कुसुमै जुध कीजै न। सार भर धार भिरै कस॥
अजै होत अरि हसै। बिजै संदेह देव बस॥
ता कारन घर घेरि। भिरत जुटि प्रथमं जोरी॥
इन तात करत कुढंग। मूल बहुरंतर फोरी॥
गुरु राज राम इम उच्चरै। समर सिंह प्रथिराज प्रति॥
धर साम दान भेदह रहै। जु कछु करौ सो मंत मति॥
छं० ॥ ५०७॥

पृथ्वीराज बचन।

तू कुपट्ट दुजराज। राज राजन क्रित कंपी॥
जुद्ध रूप पुर प्रथम। जुद्ध करि जुद्ध निकंपी॥
बद्ध जाइ भर जीय। मुकति कित्ती भर' अग्गा॥
सोइ जब सुह भोगवै। चिहुंट चीरं जिम लग्गा॥
कायरन काज आवै वसुह। वसुह न काइर घर रहै॥
ज्यौं वसुरत्ती सुर हूर सुआ। त्यौं राजा बसि इल रहै॥
छं० ॥ ५०८॥

वीर माल्हन बचन।

समुह बीर समबीर। मंत माल्हन इह सारिय॥
राज समुह रासल्लह। दिठ्ठ हूरति संचारिय॥
सुमन जेभ जन महै। क्रम्म गोरिय गुर ढिल्लन॥
इअ अजब्ब मन मत्त। टरहु जीवन कलि पिल्लन॥
अनुचरहु धरम चहुआन रन। मन सुसाहि साहाब सम॥
दुरजय दुराय छुट्टन मुगति। निय नियान घुट्टै सुदम॥
छं० ॥ ५०९॥

गुरुराम बचन ।

बहसि गुजर परिहार । जियन जुग तत्त बिचारिय ॥
सुभट मंत जानहु न । राज भंजै पचारिय ॥
मत पष्षै कै मास । जुद्ध बंध्यौ सुबिहानं ।
बिरद मंत मंतयौ । सबर अरि तजि सुरतानं ॥
जप होम मंच बलिदान तप । दुष्ट ग्रह ग्रह टारियै ॥
चौरासि जीव भोगै मनिछ । सो जीव मत्त बिन डारियै ॥
छं० ॥ ५१० ॥

राम राय रघुबंसी बचन ।

सुनि गुज्जर गांवार । राम उच्चरै सत्ति बर ॥
सर पुट्टै गा हंस । अद्ध पिष्षियै अधा धर ॥
दै अचार कुल अधम । राम रोगौ नह बुभझै ॥
ताव जुरा घृत देइ । कित्ति अन कित्तिय सुभझै ॥
सुरतान सेन कित्तक बहन । अरु कित्ती कुल भंजियै ॥
पारथ्थि राव रावल सुनै । जिन कित्ती ते लज्जियै ॥
छं० ॥ ५११ ॥

माल्हन परिहार बचन ।

परसि अमत परिहार । गुज्ज गांवार बात सुनि ॥
जनम लोभ इह जानि । कित्ति मंडियै तनह फुनि ॥
जु कछु जंत न्रिम्मए । कहै सब माया मेरी ॥
माया मेरी कहत । निमुष चलतें नह हेरी ॥
सो मिच नंद अप्पन सुगति । जुगति मोह भंजै भिरै ॥
भोगवै दुष्य जीवै बहुत । कहौ जु कछु जिहि उब्बरै ।
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रसंगराय खीची बचन ।

फुनि कहै राव परसंग । बिहंसि बुल्ल्यौ चमरारिय ॥
इनहि सूर सांमंत । बार बेरह मह[1] झालिय[2] ॥

(१) ए० कृ० को०—हरन । (२) ए० कृ० को०—डालिय ।

विषम दोह लग्गौ प्रमान। रति बाह करिज्जै ॥
अजहु हमे संग्राम। फेरि सुरतान गहिज्जै ॥
रष्षनह राह ज्यौं उड़गनह। सयन चंद चँपि चंद गहि ॥
ग्रह भजन भरम जामन मरन। किंत्ति काल कूटी फुरहि[1] ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

सुनि सुमंत सामंत। सुचिय बंधवति पुब्ब सम ॥
साम अग्गि गुर मंच। तत्त जानौ सु छुट्टि भ्रम ॥
सहस धीर ज्यौं सूर। सहज लग्गीत ग्रहन[2] बर ॥
बुद्धि[3] पराक्रम बंध। सुरन अप्पौ राजी बर ॥
चिचंग राव रावल समर। समर मोह ग्रह जस छुटी ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। यों अवाज सम्मर फुटी[4] ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

देवराज बग्गरी बचन।

दूहा। देवराज जपि जैत सों। तुम जानौ सब तंत ॥
उहि दिन बहु जित्ते रबद। इहि दिन इह गत मंत ॥
छं० ॥ ५१५ ॥

कवित्त। एक सुदिन सामंत। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। पंग जग्यह घर रुंध्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। चाय चालुक्क बिडारयौ ॥
एक सुदिन सामंत। राज रिनथंभ उधारयौ ॥
दिन एक स्वामि सामंत कौ। मंत छंडि कलहंत रजि ॥
मुष लोकि लोकि जीवत जरिय। घरिय षट्ट घरियार बजि ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

सब सामंत अमंत। सुनिय बोल्यौ गिरवर पति ॥
अहो सूर सामंत। अंत कालह विगरिय मति ॥
अप्प अप्प मुष चवै। भेद अंतर गति मंडै ॥

(१) ए० कृ० को०—लुरहि। (२) ए० कृ० को०—ग्रहत।
(३) ए० कृ० को०—बहुतै। (४) ए० कृ० को०—पुटी।

इहै अष्टम मत होय। अहित दित दोऊ षंडै॥
तुम करहु मंत एकंत मिलि। जुद्ध ध्रम्म छत्रपत्ति छिति॥
जानौ न और उपजै न कछु। इहै पंथ आदिहि विगति॥
छं० ॥ ५१७॥

दूहा। समर समर बत्ती सुनी। हुए सबै मति एक॥
इह ज्रुगिंद अग्या दई। ग्रहैं लरन कर तेक॥ छं०॥ ५१८॥

सामंतों की बात सुन कर रावाल जी का किंचित रुष्ट सा होना।

कवित्त। जुद्ध मंत सामंत। यपिय चहुआन प्रान घन॥
सबै स्हर सामंत। चिंत लागै सु जोर मन॥
मुष्य तेज असहेज। नेंन नंचै सु स्हर रस॥
उद्दलोक आपेष। भ्रम्म अम्मै व स्वामि तस॥
सा लष्षि अष्षि गिरि चित्रपति। दुसह काल कारन धर्यौ॥
सनमंध सगप्पन जानि जिय। सुअन सोम प्रति उच्चर्यौ॥
छं० ॥ ५१९॥

सब सामंतों का कहना कि जो कुछ रावल जी कहें सो हम सबको स्वीकार है। रावलजी का कहना कि कुमार रेनसी को पाट बैठाल कर युद्ध किया जाय।

पद्धरी। उच्चर्यौ इष्षि दष्षिन नरेस। मन्नेव विषम कित काल एस॥
संग्रह्यौ भेव अंतर उरेव। जग्गयौ बीर दैवात देव॥
छं० ॥ ५२०॥

दिल्लीव बंध बंधौ सु पथ्थ। रष्षहु कुमार भर रेन सथ्थ॥
सभरे वत्त सा संभरेस। मन्नेव मत्त हित्तं हरेस॥
छं० ॥ ५२१॥

बोलयौ राज जामानि ताम। साहाव अव्व बल बिषम काम॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनंत। मंडौ बथित्ति पच्छेव मंत॥
छं० ॥ ५२२॥

जंपी सुबत्त रावल सहित्त। सच्ची सुसोय सुम्भा सुभित्त ॥
पुम्मान ग्यान जोगिंद राज। चैकाल ग्यान सुभभै सुधाज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥
चयगुन अतीत बुझ्झै चिलोइ। जग तंत मंत कारन सुजोय ॥
वैदेह जेह वैदेह अप्प। पग्गह सुबुद्धि सुव गंग तप्प ॥ छं० ॥ ५२४ ॥
ब्रहमंड पिंड बुझ्झै पुरान। षट दृष्टि दूह विद्या विनान ॥
आगंम गंम बुझ्झै गुराह। बुझ्झैव ग्यान मग्गा अथाह ॥
छं० ॥ ५२५ ॥
अवधूत राइ गोरष्य ग्यान। नर लोइ देह देवंग जान ॥
सनमंध सगप्पन अप्पनेह। जंप्यौ सुक्रित्य कारन्न तेह ॥ छं० ॥ ५२६ ॥
हम हीन आउ सामंत सूर। बुझ्झैव पच्छ मंडी समूर ॥
रष्यौ सुपच्छ रैनं समुझ्झ। रष्पहि सु देस दिल्ली सु गुझ्झ ॥
छं० ॥ ५२७ ॥
उच्चर्‍यौ ताम जादो सुजाम। धनि मत्ति गत्ति चहुआन ताम ॥
रष्यौ सु हृद्ध भर पच्छ काज। थंभै सुदेस रष्यै सुलाज ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
जिहि पुत्त एक सा पुत्त ग्रेह। थंभै सुरोज कुल वट्ट तेह ॥
बिन पुत्त जेम देवल अथंभ। ढहि परै भिन्न भिन्नह अचंभ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥
बिन पुत्त पच्छ जानै न नाम। सुभ क्रंम धम्म को करै काम ॥
देवतं देव देवौन लोक। मागंतं पुत्त बिन सबे फोक ॥
छं० ॥ ५३० ॥
तिन कज्ज राज इह मतौ मन्नि। चिचंग राज जंपै सु धन्नि ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

पृथ्वीराज का रावल जी का बचन मान कर जैतराव के ऊपर कुमार का भार देना।

कवित्त। सुनिय बत्त चहुआन। हित्त आभित्त[१] मन्नि मन ॥
पहु चिंत्यौ पामार। छोनि[२] कुम्मार लाज तन ॥

[१] मो०-चित्त　　　　(२) को०-छोरि।

मंत गंठि मन संठि। जैत रष्पहित राज रह॥
घरिय हीय साधीय। अप्प गंभीर धीर वह॥
सनमुष्प आय सिर नाय करि। कहि राजन परसंस करि॥
राषहु सुराज ढिल्लिय सुथल। राजं चित्त जानहु सुघरि[1]॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सो संभरि ढिल्लीस। जैत अप्पह आभासिय॥
करिय किंत्ति विधि नीति। रीति राजंग रहासिय॥
रयन पान संग्रहौ। देस सिर भार सुधारौ॥
रष्पहु रज चहुआन। प्रीति अप्पा प्रतिपारौ॥
उच्चर्यौ गरुअ पामार गजि। षग्ग सीस आयुस सजि॥
आरत्ति नेन श्रुति बेन तन। उद्दसि रोम मुछां उसजि[2]॥
छं० ॥ ५३३ ॥

जैतराव का राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार करना।

तबै कहै जैत पामार। अहो ढिल्ली नरेस सुनि॥
अज्ज कज्ज मोकंध। रेन कारन्न आगि गुनि॥
आदि छत्र तुम सीस। अज्ज सिर मुझ्झ किंत्ति पल॥
भर गोरी गरुअत्त। करौं उझ्झार झार दल॥
संचरो मंझ बिंबे बहरि। विधि कारन मो कंध दिय॥
को करहु बंध संधहि सकल। में जित्त हरि लोक लिय॥
छं० ॥ ५३४ ॥

प्रसंगराय खीची और अन्य सब सामंतों का भी दिल्ली में रहने से नाहीं करना तब रावलजी का अपने भतीजे बीरसिंह को राज्य का भार देना और सामंत कुमारों को साथ में छोड़ना।

पद्धरी। सुनि बत्त सच्च संभरि नरेस। परसंसि जैत अप्पह असेस॥
परसंग राव षीची स बोलि। गरुअत्त गात उत्तंग तोलि॥
छं० ॥ ५३५ ॥

(१) ए० कृ० का०-सुघरि। (२) ए०-उससि।

तुम धरौ पानि कुम्मार रेनि। रष्यौ सु रज्ज कज्ज हत्ति येनि ॥
बोलयौ ताम षीची सुगाजि। उभ्भेर अंग ष्हरत्ति भाजि ॥

छं० ॥ ५३६ ॥

जित्तौं सुलोक सुरपत्तिराज। उद्धरों सीस षग स्वामि काज ॥
कूरंभ राव बलिभद्र बोलि। पामार सिंघ ओढे सु ओलि ॥

छं० ॥ ५३७ ॥

जादव सुजात आरज कमंध। आभासि कहिय न्रप करहु बंध ॥
उभ्भरे सोय भर च्यार भार। गज्जेव गेंन असि रुद्ध झार ॥

छं० ॥ ५३८ ॥

जित्ते सुलोक जे उद्ध उद्ध। सज्जै विलास सुरतरु निरुद्ध।
जे जे सुराज आभासि ष्हूर। जंपेव भेव तेते करूर ॥

छं० ॥ ५३९ ॥

अति दुमन देखि जंगल नरेस। चिचंगराव चिंते सहेस ॥
निंज बंधु सुअंन बरसिंघ बोलि। ष्हरत्त गहर जिन लाज तोल ॥

छं० ॥ ५४० ॥

रष्षे सुभट्ट सै सत्त तथ्य। ष्हरत्त घत्त संग्राम हथ्य ॥
सह रष्षि पोस रेनं कुमार। बंधेव बंध सारज्ज सार ॥

छं० ॥ ५४१ ॥

ईसरह दास सुअ कन्ह सादि। कमधज्ज बीर चंद्रह सुवादि ॥
कैमास सुअन परताप मानि। सुअजैत करन आभासि आनि ॥

छं० ॥ ५४२ ॥

सामंत सिंह गंहिलोत गानि। परतोप सुअन परताप जानि ॥
जयसिंह मदन सुअ बोलि बंदि। परिहार तेज ष्हरत्त नंदि ॥

छं० ॥ ५४३ ॥

आभासि सब्ब परसंस किन्न। गुन जंपि प्रयक उच्चान भिन्न ॥
रष्षै सु पान रेनं कुमार। वाजे अनंत बज्जे उदार ॥

छं० ॥ ५४४ ॥

हय दोय सोय दिन्ने सउंच। राषे सु सब्ब भर राज संच ॥

छं० ॥ ५४५ ॥

यह समाचार सुन कर कुमार रेनसी जी का युद्ध में जाने के लिये हठ करना।

कवित्त। तब सुनि रेन कुमार। पच्छ रष्षै राजानं॥
पंच पथ्य कै काज। मोहि ढिल्ली धरवानं॥
इंद्रपथ्थ तिल पथ्थ। पथ्थ सोवन पानीपथ॥
बाग पथ्थ धर काज। और रष्षै सामंत सथ॥
छचीन ध्रम्म धर राज सुनि। जौ आपन अनकन करै॥
हरै जनंम मानुष सुपति। अरु निहचै नरकह परै॥छं०॥५४६॥

पृथ्वीराज का कहना कि पिता का बचन मानना ही पुत्र का धर्म है।

दूहा। तब राजन बोलै सुपुत। आदि ध्रम्म स विचार॥
पिता वाच मानै सु सुन। ते धर राषहिं सार॥छं०॥५४७॥

कुमार का योग लेने के लिये उद्यत होना परंतु राजा और गुरु राम और कविचंद के समझाने से चुप रहजाना।

भुजंगी। तबैं जंपि तामं सुरेनं कुमारं। सज्यौ साथ राजंगं जगं सुभारं॥
पिता देव सेव[१] सुसेव्रं विरंची। न चूकै तनं षचि राजं सु अंची॥
छं०॥५४८॥

करो चूक सबि लागि राजं सुकाजं। सजौ बन्न मारग्ग बद्री सुआजं॥
जटा बंधि लंगोट अंगं लपेसं। महा मोनधारी वधं पंडवेसं॥
छं०॥५४९॥

तपै जाय कासी प्रयागं सुथानं। ग्रहै घोर तप्यं करै धूम पानं[२]॥
इला आदि छची कर्‌यौ छित्ति कामं। रहौ लोभ माया धरे पच्छधामं॥
छं[३]॥५५०॥

इसी बात कहुंति कै मूढ़ प्रानी। कही बाद बादै कुमारंति बानी॥
सने[४] उच्चर्‌यौ ताम दिल्ली नरेसं। सदा विद्धि सिद्धी व राजंग एसं॥
छं०॥५५१॥

(१) ए० कृ० को०-राषै। (२) ए० कृ० को०—देवं।
(३) ए० कृ० को०-नहीं मोह कामं पिता राजधानं। (४) ए०-मते।

महाजन्न मारग्ग बूझौ विचारं । तरं बेलि किती चढ़ै ध्रम्म धारं ॥
तनं रीति आदित्त गत्ती समानं । पुनं जात अंतं पुनं जात आनं ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

अहं संक्रमं प्रान सुरतान साथं । सजौ सूर राहं चलै कित्ति काथं ॥
कहै राज रामं गुरं पुच्छि दिष्यौ । कबीचंद बानी सुबानी विसिष्यौ ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

गुरं राज बोलै भटं चंद साषी । पिता बाच मानै इहै पुत्र भाषी ।
अहो आदि माता पिता मूल जानं । पछै तीरथं आठ सट्टं प्रमानं ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

कहै गंग गोदावरी ग्रेह माहै । जिनै मात सेवा पिता सेव ताहै ॥
धरा ध्रम्म राषे पिता बाच मानै । ग्रहै राज भारं सुरं पथ्थ यानै ॥
छं० ॥ ५५५ ॥

व बृछित्ति काजै धरयौ सूर लाजै । अरी आय लागै तबै जुड्ड साजै ॥
तुमं काज ढिल्ली गरै लाज आनी । जबै आय लागै तबै काम जानी ॥
छं० ॥ ५५६ ॥

तुमं सथ्थ सामंत पुत्रं सुभट्टं । सजै भारथं सार ठेलै सु थट्टं ॥
इनं बत्त कज्जै तुमं पच्छ रष्यं । सनी राज पुत्तं न बोलेति भष्यं ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

उस समय नाना प्रकार के भयानक अशकुनों का होना और इसके निर्णय के लिये राजा का ज्योतिषी को बुलाना ।

सोइ विद्धि अरिष्ट सोचै अपारं । धरा व्योम पानं तरं बंन चारं ॥
धरा धूरि गाजी रहै वारि वाहं । रसं छोनि मुक्कै दिगं दाह दाहं ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

फलंतं विकालं तरं सुम्म नारं । स्रवं स्रोन धारं बनं वार वारं ॥
गहक्कंत गाजै चईतं चिकारं । दिनं सद्द वद्दंति फेकी पुकारं ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

करे मालयं धप्पि प्रासाद कोटं । प्रतिम्मा प्रतंती चलै आस मोटं ॥
मुषं धोम छोनं स्रनेनं प्रचारं । प्रती यान छुट्टै अपुट्ठी उसारं ॥
छं० ॥ ५६० ॥

बहै अब्ब सम्मीर नीरं अपातं। भ्रमै गिद्धिनी चिल्हनी रूप रातं॥
विकंतं सकंतं अनूपं उहासं। घरी गौष जायं गवायं घरासं॥
छं० ॥ ५६१॥
सिरं टून चेवं अनेवं प्रसायं। नयंनं बयंनं अवंनं विथायं॥
वडं बागवा चीय माहीष तामं। प्रसंवं सरुडं अभूतं दुरामं॥
छं०॥ ५६२॥
तनं कंप स्वेदं फरक्कंत रोमं। मनं भीत रीतं चरं चंच लोमं॥
सु पत्तं दुपत्तं सुदीसै उरानं। लषै सूर सामंत कैलास थानं॥
छं०॥ ५६३॥
महा बुद्धि दैवग्य बुझ्झै वजामं।जगं ज्योति व्यासं हरी जैति तामं॥
लहै सब्ब जोतिष्य विद्या विनानं[1]। उरं इष्ट भासे सरूपं सन्यासं॥
छं०॥ ५६४॥
दुअं पुच्छि आभासि दिल्ली नरेसं।कही अंत आरिष्ट सोचै असेसं॥
कही बिप्प भा सैंवरा सेव सब्बं। निरष्षै सु कालं दुरासद्द अंबं॥
छं०॥ ५६५॥

ज्योतिषी का अशकुनों का और ग्रहचाल का फल बतलाना।

कवित्त। तब जंपत जग जोति। व्यास हरि जोति अपारं॥
सुनौ राइ दिल्लीस। तजो मन षेद सुभारं॥
काल व्याल संसार। ग्रसै सब रिद्धि लोक रह॥
करै न रोस सदोस। हम जंपैं सुविद्धि इह॥
उच्चरै राज प्रथिराज तब। कहौ चित्त छंडैद्रुमय॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनत। हिय हम मानहि अंत षय॥छं०॥५६६॥
हनूफाल। जंपे वतं जगजोति। हरि ज्योति वयासह जोति॥
विधि काल व्याल विनान। सुक मुनिय जान गियान[2]॥
छं०॥ ५६७॥
आगंम आगम विद्धि। अति इष्ट बुद्धिय सिद्धि॥
ग्रहचार वक्र विगत्ति। षिति सयल भेद विभत्ति॥
छं०॥ ५६८॥

(१) ए० को० कृ०—विज्ञानं। (२) ए० कृ० को०—ग्यान विनान।

सनि वक्र दिल्लिय देस। सुरभन नयर विरेस॥
अरि ग्रेह कोप्यौ अप्प। सुर असुर मंचि यदप्प॥छं०॥ ५६९॥
ग्रह विषम तन चहुआन। ग्रह दुष्ट छत्रि छितान॥
हुअ हिंदु युद्ध तुरक। रेह उंच सजहि इक॥ छं०॥ ५७०॥
दिल्लीस[1] गज्जन ईस। सम चलहि प्रान पुरीस॥
दिल्लीय के दिन राज। चहुआन रेन बिराज॥ छं०॥ ५७१॥
साहाब सूअ सहाब। अति तेज होय सताब॥
करि बंदि जीतहि देस। दस जोरि जर अस हेस॥छं०॥५७२॥
सब करहि भरनिय पानि। सजि चलह कनवज थान॥
नन जुरहि कमंध नरेस। सिर करहि गंग प्रवेस॥छं०॥५७३॥
षिति जीति गज्जन ईस। सम जरहि दिल्लि सरीस॥
सम जुद्ध जंगल राज। मिलि करहि स्वामि स काज॥छं०॥५७४॥
सम जग्गि गोरिय जुद्ध। पद रेनि ग्रामहि उद्ध॥
दस एक संवत सद्द। सवि अग्ग द्वादस तत्त॥ छं०॥ ५७५॥
तावं तचेव समथ्थ। असुरान दिल्लिय तथ्थ॥
एवत्त बुझि नृप राज। सं सच्यौ जरध काज॥ छं०॥ ५७६॥

ज्योतिषी की बाणी सुन कर राजा का कुपित और क्लान्त चित्त होना और सामंतों को समझाकर कहना की गोविन्द का ध्यान करके अपना कर्तव्य पालन कीजिए।

कवित्त। सुनिय बत्त दिल्लीस। रोस उब्भार अप्पं तन॥
मन उदास चिंतास। काल मन्निय सु क्रत्त मन॥
निरषि स्वामि सामंत। ताम पुम्मान स जंपिय॥
अब्ब काल संग्रहै। छोनि इह फेरि न कंपिय॥
रष्षहु सुरेन कुम्मार रज। धराबंध बंध्यौ सुभर॥
मम करौ मोह चिंतो सुहरि। सजौ स्वरग मारग सुभर॥
छं०॥ ५७७॥

(१) मो०—दिल्लेस।

तब जलद मेघ मंडिलिय। नयन पुंडीरिय सुसोभित ॥
चिसल पीत अंमरिय। गुंज मंजरिय अरोहित ॥
श्रुत कुंडल मंडरिय। मोर पंषरिय सिरोयनि ॥
मुरलि मधुर मुष्षरिय। चक्र बंकुरिय करोयनि ॥
इय धयान मंन राजन धरिय। मत्त घत्त पच्छै सरिय ॥
कैलास वास सामंत सथ। कलह केलि रची ररिय ॥छं०॥५७८॥

हनूफाल। वपु स्याम धर मति मेष। चष पुंडरीक सुरेष ॥
कच वक्र कुंतल लीन। मकरंद जै मुष पीन ॥ छं० ॥ ५७९ ॥
सुकीट हार बिहार। तम हरन किरन प्रहार ॥
श्रुत कुंड लेन धिलाल। सक सकल ग्रीव विसाल ॥छं०॥५८०॥
निज नास मोति सुहंद। तिलकं सुसम अति बिंद ॥
तें प्रतिय[1] अमर प्रतीत। रघुवंस राजस रीति ॥छं०॥५८१॥
करि करिय सिंगिनि पानि। मधु मधुर मिष्टित बानि ॥
धरि पुट्टि तूर धनुक्क। जिय जासि जानि जनुक्क[2] छं० ॥५८२॥

कवित्त। सुमन मयन मंजरिय। रमन पंजरिय विरम्मिय ॥
तिलक अलक जंजरिय। असित अंजरिय द्रिगंमिय ॥
सुश्रित चिसिति अम्भरिय। चिहुर उम्मरिय सिरन्निय ॥
सरन[3] हंस झंझरिय। डंड डंमरिय करन्निय ॥
बर बिदुष सुष्य कह हंकरिय। धरिय भगति दिसि नंजरिय ॥
अइथ द्रग्ग पंपं परिय। राज ध्यान उमया धरिय ॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दूहा। हरि माया उमया सुहरि। न्रिपवर चिंतिय ध्यान ॥
मन एकंत समंचरिय। प्रति बोधे सब्रान ॥ छं० ॥ ५८४ ॥

क्रोध और क्लान्त अवस्था में पृथ्वीराजकी मुखप्रभा वर्णन।

कवित्त ॥ अति तरक[4] बर तिष्य। पंभ तिष्यन[5] तररक्किय ॥
बंभ अंड विहरिय। सनहु दारिम दरक्किय ॥

(१) ए० कृ० को०-नीति। (२) मो०-जनक्क। (३) मो०-रसन।
(४) ए० कृ० को०-तरप्प। (५) ए० कृ० को०-तष्षन।

फनिन परिय फु फरिय। फेन फुंकरिय फनिंदह ॥
परम उग्र वपु दुर्ग। दिग्ग मुद्दिग दिग अंतह ॥
नर हर अपुव्व नहपुव्व पर। दुरद दनुज दारुन दिसनि ॥
जन हेत बिघुन्निय अधम उर। रुहिर चंद घुंटिय रिसनि ॥
छं० ॥ ५८८५ ॥

नद्दिय भीमह नद्द। घुंभ घुंभिय अररक्किय ॥
अध धक्किय धर धरनि। सीस फनपति मुररक्किय ॥
पिष्खिय रूप अपुव्व। सव्व लोयन बल घट्टिय ॥
अट्टहास टह टह उघट्टि। बरषुंज निघट्टिय ॥
गहि पलय ग्राहि तिम दुग्ग द्रिग। नर हर तप्पिय तीन पुर ॥
घव्विय बहड्ड विहरि नषन। दप्पह चंद दवित्त[1] उर ॥
छं० ॥ ५८८६ ॥

काल चक्र की प्रभूति और राजा का रेनसी जी को समझा कर उन पर दिल्ली राज्य का भार देना।

वाघा ॥ इह भविष्य बीतय दिलेसं। आवरि बीर अंग अस हेसं ॥
मंनि काल कित कारन रूपं। सादैवक्त आदि गति ओपं[2] ॥
छं० ॥ ५८८७ ॥

कालं दैव देव संहारं। कालं मंदिर मेर ढहारं ॥
कालं जगत जगत्त विलोमं। कालं सिध साधक न ओमं ॥
छं० ॥ ५८८८ ॥

कालं अजा जठर हरिवासं। कालं मानुष इंद्र विनासं ॥
कालं लंका गढ़ किय पाजं। कालं दिय म्बभषन राजं ॥
छं० ॥ ५८८९ ॥

कालं जादव कुल संहारं कालं द्वारिक समुद सिधारं ॥
कालं जलथल एक पसारं। कालं कन्ह बडपन्न सघारं ॥
छं० ॥ ५८९० ॥

(१) ए. कृ. को.-तवित्तं। (२) ए. कृ. को.-सा दैवंत आदि गति ओपं।

काल' बाल' काल' वृद्ध' । काल' जोगी काल' सिद्ध' ॥
काल' हरिज काल' चंद' । काल' नवै डुंगरी नंद' ॥छं०॥५९१॥
काल' ब्रह्मा केइ संहारे । काल' ग्रह नव नाषिच तारे ॥
मन्नि काल गति उति चहुआनं । आवरि निज्ज मारग कुल कानं[1] ॥
छं० ॥ ५९२ ॥
तब सुनि रेन कुंअर कहि सारं । इह गति इह संसार असारं ॥
इतनी बार न बोल्यौ एसं । गुरु भठ न्रप तीने सविसेसं ॥
छं० ॥ ५९३ ॥
इह अंब काल व्याल गति जानी । ते हम ग्रहै तेग परिमानी ॥
बोलै अग्गर रेन कुमारं । किय परसंस राजगति सारं ॥
छं० ॥ ५९४ ॥
राषहु रयन थानं गति थित्ती । जानहु चित्त रीति रज गत्ती ॥
का जानै सज्जी का भज्जी । जग जानै दुज्जर गति लज्जी[2] ॥
छं० ॥ ५९५ ॥
रष्षहु रयन दिल्ली रजभारं । तुम जानहु पिची पग सारं ॥
राषहु बंध नयर सुभसाजं । जं निरमितं सकल कुल काजं ॥
छं० ॥ ५९६ ॥
तब जंपै नमि रेन कुमारं । सेवा वाह पिता अगि सारं ॥
कै साजो सेवा जुध अप्पं । कै परसन बद्री पति दप्पं ॥छं० ॥५९७॥
बार बार जंपन नहि कामं । अब हम तुम रष्षौ रजमामं ॥
तब जंपै रावल प्रति राजं । तुम रष्षहु बुझ्झवि सुत आजं ॥
छं० ॥ ५९८ ॥
तब धरि पनि पज्मान कुमारं । किय संबोधि सुचित चित सारं ॥
किय अप रेन कुमार सुचित्तं । जंपे सहु चहुआन सहित्तं ॥
छं० ॥ ५९९ ॥
राषहु कुमर सथ्थ भरसारं । जे रज्जै साजै रज भारं ॥
उट्ठिय संत चिंत करि राजन । बाढ्यौ दीर धीर सब ताजनं ॥
छं० ॥ ६०० ॥

(१) ए. कृ. को.-आवारिन मारग कुलकानं । (२) ए०-लग्गी ।

जं जं जं बानी आया सह । सुनिय मंनि वित काल सुतासह ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

रेनसी जी का कहना कि मैं तो युद्ध में पराक्रम करूंगा ।

कवित्त ॥ * चक्रव्यूह भारथ्थ । रचिय द्रोण आचारिज ॥
दुरजोधन नृप कुंअर । नाम लषमना मझि सज ॥
दस हजार अनि कुंअर । रष्षि पारष्ष जुध कज ॥
एक एक भुजबल प्रमान । भद्र जातीक अयुत गज ॥
ते हनिबि सकल कहि रयनसी । भंजि ब्यूह लगि पग्ग रस ॥
अभिवन्न कुंअर अरज्जुन कौ । काम आय षोडस बरस ॥
छं० ॥ ६०२ ॥

कविचन्द का कुमार रेनसी को समझाना ।

पद्धरी * ॥ कविचंद जंपि मधु बचन जोह । राजिंद कुंअर सुनि रयनसोह ॥
सत एक पुत्र हुअ रिषभ देव । बड़ पुत्र भरथ तिहि सुनहु भेव ॥
छं० ॥ ६०३ ॥
वैराग चित्त लग्गै सुरंग । माया अलिप्त भेदै न अंग ॥
तप करन चलियं तजि राज पाट । परमोधि आय मिलि रिष्ष घाट॥
छं० ॥ ६०४ ॥
पितु मात जियत तूं तजहि देस । अपहास करहि अनि सुनि नरेसं ॥
उत्तानपात सुत ध्रूअ जेम । रहि जाय बत्त इल अचलतेमं ॥
छं० ॥ ६०५ ॥
पाटवी पूत छंडहि न रज्ज । आगम निगम बेदन बरज्ज ॥
इन भंति उक्ति अनेक उक्त । तिहि काज राज नवषंड भुक्त ॥
छं० ॥ ६०६ ॥
समझाय आनि ग्रह फिरि भरथ्थ । दै राज रिषभ निज हुअ अतिथ्थ ॥
भगवत कथा संभलि प्रबन्ध । नगहट्ठ छंडि मन महि समंध ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

* ये दोनों छन्द मो. प्रति में नहीं हैं ।

पृथ्वीराज का कुमार रेनसी का राज्यभिषेक करना।

कवित्त ॥ करिय सुचित भर सब्ब। राज दिन्नेव द्रव्य भर ॥
मंगि मदन शृंगार। गज्जबर पट्ट मद्द भर ॥
रयन कुमर आभासि। दीन माला मुत्ताहल ॥
असी बंधी निज पानि। बंदि कीनौ कोलाहल ॥
आरोहि गज्ज कुम्मार निज। पच्छ बंध सा सिंधु किय ॥
जोगिनिय बंदि चहुआन पहु। क्रत्य काज मन्नव इय ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

दूहा रेन कुंअर सोचित्त थपि। ठयौ जुद्ध मति मानि ॥
उट्ठि राज सब ग्रेह कौं। दिय अग्या बर बानि ॥ छं० ॥ ६०९ ॥

दरबार बरखास्त होना और पृथ्वीराज का रावलजी को डेरे पर पहुंचा कर महलों को जाना।

अरिल्ल ॥ उच्यौ मंत चित्त करि राजन। जै जै जै बानी आयासनं ॥
बज्यौ धीर बीर रस ताजन। सुनिय मंच किलकान सुतासनं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

कवित्त ॥ उट्ठि महल प्रथिराज। मंगि आरोहन बाजिय ॥
रावल प्रथम चढाय[१] चढ्यौ चहुआन सुताजिय ॥
करि अस्तुति सम सिंघ। तुमहि बड्डं बड्डाइय ॥
तुमं जोगिंद जग जित्त। कित्ति तुम कहिय न जाइय ॥
परसंस करंत अनेक परि। करि डेरा रावर समर ॥
चढ्ढनह बर निसि सेष कहि। आयो बज्जन बजत घर[२] ॥
छं० ॥ ६११ ॥

उधर से शहाबुद्दीन का सिंधु नदी पार करना।

बाजि घरिय घरियार। साहि उत्तरिय सिंधुनद ॥
विषम वाव उड़ि भ्रिंग। सिंधु छुच्यौ कि सद्द मद ॥
तमसि तमसि सामंत। राज राजस किय तामस ॥

(१) मो.-चढतिहि। (२) मो.-आयौ बजत बजन्न रव।

घुमरि घुमरि नीसान। थान-जग्गे मन पोवस॥
निस्सि अद्धं अनेही पीय तिय। पिय पिय पिय पप्पीह तिय॥
पंपनिय फरक्कि अंषिय अनषि उदय अनंद[1] सुबीर किय॥
छं० ॥ ६१२॥

अर्द्ध रात्रि के समय पृथ्वीराज को शाह की अवाई का समाचार मिलना और उसका सब रसरंग त्याग कर जंग के लिये सजना।

उदै अनंदिय बीर। बाजि रनजंगं बीर बर॥
क्रोध लोभ मद्द उतरि। मद पिन्नो सुगत्ति सर[2]॥
अद्ध अनेही[3] राति। अद्ध नेहं सुलितानं॥
दुहुं मिलंत महिलानि। मिलत चित अच्छरि धानं॥
तिय मद्धि पंच घट्टीय घटि। बर मिलान पोमन्न करि[4]॥
बर-बीर बेलि बढ्ढिय विषम। करन[5] छिमा छिम छन उसरि॥
छं० ॥ ६१३॥

मोतीदाम॥ सुबीर अनंद अनंदिय नंद। नच्यौ भ्रम छंडि भयानक छंद॥
कला कल्ल अप्पिर सुच्छिर बानि। सिषी सिष अब्भ सिकंडिय जानि॥
छं० ॥ ६१४॥

गये निज मंदिर समंत सूर। मिले नर नारि महारस नूर॥
मिले रस राजस पंग कुंआरि। करी परिक्रम्म सुनेदिय नारि॥
छं० ॥ ६१५॥

अनेक सुगंध सउद्ध अनूप। मिलंत[6] छिनेक सु मन्नहि भूप॥
करी घन नेहिय नेह प्रकार। मिलंन सुमंनहि मंनहि सार॥
छं० ॥ ६१६॥

करी नर नारि सुरंग उधंग। पुछै चर आगम साष सुरंग॥
रजंनिय अंत रही इक जाम। कहै दोइ दूत सुआइय ताम॥
छं० ॥ ६१७॥

(१) मो.-अनंदिय। (२) ए. कृ. को.-वर। (३) ए.कृ. को.-सनेही, सेनेही। (४) ए. कृ. को.-करिय। (५) ए.कृ.को.-मिलन्न।

पिय करुना मुष पी मुष बीर। दियौ रस संकर अंतर चीर ॥
संयोग वियोग नवै रस बंध। लही चकचक्किय है निसि अद्व ॥
छं० ॥ ६१८ ॥

षिय पिय पिट्टन दिट्ठ भवन्न। रह्यौ चित पुत्तलि जनि मवन्न ॥
पुरं पुर अम्मनि केवल साहि। मनों बिंब चोल करुन्न मिलाहि ॥
छं० ॥ ६१९ ॥

बिथा विथ कंपिन जंपिन सेइ। को पुच्छहि काहि को उत्तर देइ ॥
कथौ कथि अंगन अंगन ताहि। रहे चष जानि टगट्टग चाहि ॥
छं० ॥ ६२० ॥

क्रमं क्रम जग्गिग्गि लग्गिन नैन। गये रस छंडि मनो असु हैन ॥
रसौ रस सिद्धिय विद्धिय माल। ग्रसे सब सुष्प[1] भयानक वयाल ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

निमेष करी करुना रसकेलि। उठी बर बीर बरब्बट बेलि ॥
दिषे दिषि कंत सु दंपति चाहि। मिले चित मित्त सु अंगन साहि॥
छं० ॥ ६२२ ॥

जनों पर निद्धि सु देषिय रंक। टरै नहि चेतन ज्यों निधि संक ॥
भये रस सत्त प्रभात प्रामन। बजे रन जंग चढे चहुआन ॥
छं० ॥ ६२३ ॥

सुने धुनि राज गवन्न गवन्न। तजे तिन मत्त भवन्न भवन्न ॥
घंनंकि निसाननि नादनि बद्द। षलक्कि जंजीर उमद्द निमद्द ॥
छं० ॥ ६२४॥

षनक्किय संकर अंदुनि अद्द। ठनंक्किय घंट सु घंटन हद्द ॥
घुरक्किय घुघ्घर दादुर भद्द। * * * छं० ॥६२५॥
जयंजय सद्द बदै चहु ओर। करै जनु प्रात सिषंडिय[2] सोर ॥
झनक्किय भेरि सु झझ्झर बद्द। रनक्किय बीरन फेरिय सद्द ॥
छं० ॥ ६२६ ॥

---

(१) ए०—मुष्प। (२) ए० कृ० को०—सिकंडिय।

हरक्किय भंभ सुराज रवह । अरक्किय नाग गयो सिरलह ॥
तुरंक्किय तुंग तुरंगन चीस । सरक्किय सप्पय सेसनि सीस ॥
छं० ॥ ६२७ ॥

परक्किय पष्पर पष्पर तोज । ढलक्किय ढाल सुढल्लिय प्रोज ॥
हलक्किय हाल फवज्जिय सूर । धरक्किय धाम सु कातर क्रूर ॥
छं० ॥ ६२८ ॥

कथं कथमान गुमान उमान । दुअं दस कोस मिलान मिलान ॥
सु हिंदुअ मेछ बजयौ रन तोल । गयौ दिव देव कवी दिय बोल ॥
छं० ॥ ६२९ ॥

निमेषक भूमि अयासह अंग । चल्यौ जनु इंद्र धनुक्कह रंग ॥
जयं जय सद्द करी तिहि बीर । कह्यौ तिनि राज रवन्नह पीर ॥
छं० ॥ ६३० ॥

कविचन्द का बीरभद्र से युद्ध का भविष्य पूछना और बीरभद्र का कहना कि पृथ्वीराज पकड़ा जायगा ।

दूहा । तुम सु बीर जानहु अंवसि । कहौ राज न्रिम्मान ॥
बीर कहै संभर परै । ग्रहै मेछ चहुआन ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली से चलकर दस कोस पर पड़ाव डालना ।

साहस गहन सहस्र किय । हरिग रास चहुआन ॥
पंच सबद बज्जिय सघन । दिय दस कोस मिलान ॥
छं० ॥ ६३२ ॥

पृथ्वीराज के कूच करते समय संयोगिता की विरह बिथा का वर्णन ।

कुंडलिया । नृप पयान पोमिनि परषि । घटि साहस घटि एक ॥
सुकय केलि पियूष पिय । जतन करहि सषि केक ॥
जतन करहिं सषि केक । हाय कार जं जं जंपहि ॥
दंत कष्ट कर सिंड़ि । थरकि थरहर जिय कंपहि ॥

(१) ए० कृ० को०-सिंहि ।

इह प्रयान नृप करत। परी संजोगि धरा धपि॥
सषी करत सब जतन। चलत पयान तहां नृप॥
छं०॥ ६३३॥

चोटक॥ जतनं जतनं किय झंझलियं। दिषि दीपक भौंन भरयौ सुहियं॥
भवनं भवनं भवना गरियं। धर मुच्छि परी बुधि सागरियं॥
छं०॥ ६३४॥

ससि सूर चयं रवि जोग ससी। विष ज्वाल असी सुमनं विगसी॥
द्रिग चंचल अंचल सोमुदयं। विरहा उर उग्ग ग्रसी सुधियं॥
छं०॥ ६३५॥

अहि धुट्टि लियं षयरं जुलियं। यह तुट्टि सुधा निधि की विधियं
बर बिंब बिलोकि सषी करियं। असु आसिक नासिक से झरियं॥
छं०॥ ६३६॥

अह कट्टहि निट्ठ निसान घटे। बिरही घटिका जनु अंगि पढे॥
बिरही बरनेह अनंग कसं। भए जानि किरोग चिदोस बसं॥
छं०॥ ६३७॥

सुबढी विरही न घटे न घटं। सु चढी जनु बेलिय ब्रष्य बटं॥
जल नेननि बूंद परै कुचयं। तिनकी उपमा नयनं सचयं॥
छं०॥ ६३८॥

जुरठी हुति पुब्ब कमोद कली। तिहि तारक सोम बसीठ हली॥
इहि सारन प्रान न मुक्कि पती। तिन मंडि रहे दुष देषि जती॥
छं०॥ ६३९॥

घल चंदन चीरति सीर करै। लहरी विष जानित प्रान हरै॥
सषि सूंठिन भूढ रसे सुतनं। घन सार निहारनि नारि यनं॥
छं०॥ ६४०॥

नटि नारिय नारिय पानि गहै। तजि जाहिन अंक वियोग सहै॥
पल ध्याननि आननि नैन चहै। अलि ओटन जोट वियोग सहै॥
छं०॥ ६४१॥

घन घूमरि झूंमि समीप रहै। ठग टग्ग लगी चष कोन चहै॥
षिन दाषिन षीनइ षीन भई। घरियार जिहारत प्रात भई॥ ६४२॥

कुंडलिया ॥ घर घयार वज्जिग विषम । हलिग हिंदु दल हाल ॥
दुतिय चंद पूनिम जिमैं । बर बियोग बढि बाल ॥
बर बियोग बढ़ि बाल । लाल प्रीतम कर छुट्टौ ॥
है कारन हा कंत । आस आसु जानि न फुट्टौ ॥
द्रेषंत नेंन सुभझ्झ न दिसि । परिय भूमि संथार ॥
संजोगी जोगिन भई । जब बज्जिग घरियार ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

कवित्त ॥ बढि बियोग बहु बाल । चंद विय पूरन मानं ॥
बढि बियोग बहु बाल । वृद्ध जोबन सममानं ॥
बढि बियोग बहु बाल । दीन पावस रिति बढ्ढै ॥
बढि बियोग बहु बाल । लच्छि कुलवधु दिंन चढ्ढै ॥
बढ्ढै बियोग बालनि बिरति । उत रावन सेना चढिय ॥
करकादि निसा मकरादि दिनं । बाल बियोगत सम बढिय ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

वही रत्ति पावस्स । वही मघवान धनुष्षं ॥
वही चपल चमकंत । वही बगपंत निरष्षं ॥
वही घटा घन घोर । वही पप्पीह मोर सुर ॥
वही जमीं असमान । सही रवि ससि निसि वासुर ॥
वेई अवास जुग्गिंन पुरह । वेई सहचरि मंडलिय ॥
संजोगि पयंपति कंत बिन । मुहि न कछू लग्गत रलिय ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

दूहा । जल अधार रष्यो जियन । व्रत रष्यौ नन प्रान ॥
अब रवि मंडल बर मिलन । कै जोगिनिपुर थान ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

हरिहु आदि अमर सकल । अलि रष्यहु अलि भोर ॥
जोग भोगु पिय संग रहि । तियन भ्रम्म घर और ॥
छं० ॥ ६४७ ॥

कै धरणी कै अम्मरह । कै अंतर तरु मूल ॥
देक्काल बातूल मिलि । उड़हि तंत तन तूल ॥
छं० ॥ ६४८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अधीर ।

पृथ्वीराज की चढ़ाई की तैयारी का वर्णन।

पद्धरी॥ चढि चल्यौ साह चहुआन सूर। धुंधरी विदिसि दिसि दिपिकरूर॥
सुर धुनि निसान बज्जे सुरंग। नपफेरि रंग सिंधु उपंग॥
छं० ॥ ६४९॥

दल चलहि दवति चंपे दुरंग। उरभंत पंथ इत्ते कुरंग॥
सो सद्द बद्द संभरे सूर। उट्ठंति मुच्छ बंकी करूर॥
छं० ॥ ६५० ॥

चिंतवै सूर सा भ्रंम हेरि। मन कहै गहै सुरतान फेरि॥
बारुन्नि बहै गजदान भद्द। क्रोधह कुरंग दीसै रवद्द॥
छं० ॥ ६५१ ॥

आरुहै मिट्ठ गज तुरंग बट्ठि। कातरिति कंमि गिरि धुम्र चट्ठि॥
धावंत तेज पुज्जै न धाइ। छुहै न प्रान जिन करै छाइ॥
छं० ॥ ६५२ ॥

मद सरक धरक जोगी समान। क्रम क्रमनिं असो पयपयन जान॥
दीसै तुरंग अवधूत धूत। मानी सुदंति पंडै सपूत॥
छं० ॥ ६५३ ॥

चतुरंग सेन सजि बर प्रमान। सिंधूरन अग्ग चढ़ि चाहुआन॥
षोले किपाट बर मुगति रूप। सोमेस पूत अवधूत भूत॥
छं० ॥ ६५४ ॥

चहुआन को चलते समय अशकुन होना।

कवित्त। चढ़त राज चहुआन। छीक अगनेव देव दिसि॥
मिल्ल कुंजर बिन दंत। अश्व अपलानि चिंत बसि॥
सूच मंत तुट्टयो। राज दिट्ठ सु विचारय॥
गौर कुंभ उप्परै। स्याम कुंभह अद्धारियं॥
तजि मोष रस्स संधी चिषा। आवै क्रित गवनन छची॥
असु नीम जोग पंचमि दिवस। चढयौ राज निसै तुछ सची॥
छं० ॥ ६५५ ॥

(१) ए० कृ०को०– कार्य। (२) ए०–निंज।

गजनी के गुप्त चरों का शाह को पृथ्वीराज के कूच का समाचार देना।

दूहा। इह चरित्र पिष्षिय चरत। वह चरित्र नह राय॥
.सो चरित्र सुरतान सों। सिंध उलंघिय धाय॥
छं०॥ ६५६॥

हुवि हमीर दल हाम करि। मन करि अग्गो पच्छ॥
दूधें दद्दौ ज्यौं पियै। फूंकि फूंकि कै छच्छ॥
छं०॥ ६५७॥

कुंडलिया॥ कूच कीन्ह धंधार धरि। हल्लिग हिंद दल हींच॥
कह्यौ राज सुरतान कह। सिंधु बिहथ्थै बीच॥
सिंधु बिहथ्थै बीच। फेरि पुच्छै चहुआन॥
कहौ मग्ग परिमान। जेह संख्या तुम जान॥
कौंन ठौर जुध मेल। होइ चिंतौ तुव सोचह॥
सकल सबै सामंत। करौ नदि उत्तरि कूचह॥
छं०॥ ६५८॥

राजपूत सेना का पहला पड़ाव पानीपत में होना।

दूहा। जाय जलह पथ उत्तर्यौ। दिल्ली वै चहुआन॥
सूरन अति आनंद हुअ। सहि संजोगी हान॥
छं०॥ ६५९॥

शाही सेना का चिनाव नदी पार करना।

कवित्त। दिल्लिय ते सत कोस। अग्ग सिंध[1] नदी कहिज्जै॥
द्वादस नद सतत्रंज। तहां न्रप दल सलहिज्जै॥
दिल्ली तें सत दोइ। नगर लाहौर सु थान॥
असी कोस नदि बियह। परें लाहौरयि जान॥
उत्तरौ सिंधु साहाब दी। बिहथ परै आयौ सुरजि॥

(१) ए०-सिंध, कृ० को०-सिंह।

दिन सत्त अट्ठ महि जानिहौ। भो आयो चिन्हाब गजि ॥
छं० ॥ ६६० ॥

दूहा। सा चिन्हाब लाहौर तें। कही कोस च्यालीस ॥
अप्पन सेन समाहिकै। जाय मिल्यौ दिल्लीस ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

पावस पुंडीर का उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज के पास जाना और क्षमा मांगना।

कवित्त। इह अवाज पुंडीर। सुनिय बहु रोस उपन्नौ ॥
पावस राइ हिंसार। कोट छंडवि संपन्नौ ॥
आज राज कौ काज। करौं तिल तिल तन बंटौ ॥
तौ धीरंजा धीर। स्वामि अग्गैं रन नट्टौ ॥
इनवार भत्य जग्गौ नही। छीनो छल कायर करै ॥
हारै जनंम मेटै सुजस। कहर क्रूर दोजिग परै ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

आयौ छंडि हिंसार। राज सतरंग मिलन्नौ ॥
सबैं सूर सामंत। जाय अग्गैं होय लिन्नौ ॥
लग्यौ पोइ रा जान। भाव रष्यौ मन उंचो ॥
हेत बत्त पुच्छी न। नैन ते नैन दुसंचौ ॥
यौं कहै सबैं सामंत तब। राज पाय पुंडीर गहि ॥
अपराध कोटि बगसंत न्रप। हुई बात पिछली सही ॥
॥ छं० ॥६६३॥

पृथ्वीराज का पुंडीर वंश का अपराध क्षमा करना।

कुंडलिया। तब तुम लूटि छंडिय सहर। अब आए जुंध भीर ॥
धीर लाज कवि लगी गनौ। रे पावस पुंडीर ॥
रे पावस पुंडीर। धरि लाजह जल रष्यौं ॥
नत सोमसर आन। मान गढ़ते गहि नष्यौं ॥
हंसहि मोहि सामंत। लै जु आय तुम सब्बह ॥

(१) मो०—नत। (२) ए० कृ० को—सहहि।

कहै राज पृथ्वीराज। सहर लुट्यौ तुम तब्बह ॥

॥ छं० ॥ ६६४ ॥

कवित्त। तुम लुट्यो लाहौर। भौमिभंज तुमी भग्गा ॥
साम भ्रम्म पथ मुक्कि। पंथ सो द्रह सुलग्गा ॥
अभ्भ धीर अरु सुकथ। पुत्र भग्गा चंदानी ॥
राज संह चहुयो। भंगि अग्या राजानी ॥
पुंडीर राइ साधन सकल। अकल मोह बंधौ नजिय ॥
दिन अठ्ठ द्रह्ह चहुआन कौ। रहा न न्रप दरबार बिय ॥

॥ छं० ॥ ६६५ ॥

घरिय चयारि पुंडीर। छिमा छिम अदब परघ्यौ ॥
सामंतन सब सुनत। मंत अच्छौ मिलि भष्यौ ॥
हमहि द्रोह लग्यौ दिवानं। सुतौ सुरतानह जानै ॥
दौए सत्त अट्टमै। छोड़ मौलिप चहुआनै ॥
जत्र लोह कोह परियारतें। काटि अरिन भंजौ सुरिन ॥
प्रथिराज काज तरवरि भर। जौब उड्डबि लग्गौ तरनि ॥

॥ छं० ॥ ६६६ ॥

शाही फौज की चाल और नाके बंदी का समाचार पाकर पृथ्वीराज का कविचन्द को हम्मीर को मनाने के लिये लेजाना।

दूहा। धरिय पंच बत्ती सुबर। कागद आय सपन्न ॥
अरियन दिसा जु विह्नी। जोगं नेव कर दिन्न ॥

॥ छं० ॥ ६६७ ॥

साटक। सोतं श्री फलं लाभ राजन बरं गोरी ग्रहं बंधनं।
पावक्कं अरि रोह दाहन बरं भूभार उत्तारयं ॥
मानं एगंग्र्य पंग जग्य सरसं वग्गं बरं होमयं ॥
नियं श्रूत विधान न्निमित बरं सामं भुजं राजयं ॥

॥ छं० ॥ ६६८ ॥

दूहा॥ ॥ सो मतन मंतौ न्रप्पतिं। वामन जंबू राइ ॥
और काम चहुआन कौ। कहै सुकिज्जै धाइ ॥

॥ छं० ॥ ६६९ ॥